

हरिभूमि रेवाड़ी मूिमि

रोहतक, रविवार, 20 जुलाई 2025

तापमान



अधिकतम 32.5 डिग्री
न्यूनतम 20.5 डिग्री

11 सैनी सभा के चुनावों में मनोज ने मारी बाजी, नविंद्र को नौ मतों से दी शिकस्त



12 खोरी गांव एक माह से मुख्य मार्ग से कटा, ग्रामीणों को हो रही भारी परेशानी, समस्या का नहीं हुआ समाधान



खबर संक्षेप

मारपीट मामले में तीन आरोपी गिरफ्तार

धारुहेड़ा। पांचाल कॉलोनी में मारपीट करने और धमकी देने के मामले में पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने पीड़ित के बयान पर 15 जुलाई को विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज करने के बाद जांच शुरू की थी। जांच के बाद पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया था। अब इस मामले में पांचाल कॉलोनी निवासी चिरग, नितेश और मनीष को गिरफ्तार किया गया है। उन्हें मामले की तफ़्तीश में शामिल करने के बाद पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया।

ट्रेन में चढ़ते समय मोबाइल फोन चोरी

रेवाड़ी। रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नं. 4 पर ट्रेन में चढ़ते समय एक महिला यात्री का मोबाइल फोन चोरी हो गया। राजस्थान के अलवर की रहने वाली निर्मल ने जीआरपी को दर्ज शिकायत में बताया कि वह ट्रेन से जाने के लिए रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नं. 4 पर खड़ी थी। उसे कोच नं. एस-4 में सवार होना था। ट्रेन आने के बाद जब वह उसमें चढ़ने लगी तो किसी ने उसका सैमसंग कंपनी का मोबाइल फोन चोरी कर लिया। जीआरपी ने उसकी शिकायत पर केस दर्ज करने के बाद जांच शुरू कर दी।

हादसे के बाद फरार चालक गिरफ्तार

खोल। थाना खोल पुलिस ने सड़क हादसे के बाद फरार हुए गाड़ी चालक को गिरफ्तार किया है। गत 15 जुलाई को खोल के पास हुए हादसे में एक व्यक्ति घायल हो गया था। उसके बयान पर पुलिस ने गाड़ी चालक के खिलाफ केस दर्ज करने के बाद उसकी तलाश शुरू कर दी थी। जांच के बाद पुलिस ने इस मामले में बिहार के शोभनगर निवासी पंकज को गिरफ्तार कर लिया। तफ़्तीश में शामिल करने के बाद आरोपी को पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया।

सड़क हादसे का आरोपी चालक गिरफ्तार

कुंड। थाना खोल पुलिस ने 5 जुलाई को सड़क हादसे का अंजाम देने के आरोपी गाड़ी चालक को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार 5 जुलाई को सड़क हादसे के बाद गाड़ी चालक मौके से फरार हो गया था। हादसे में एक युवक घायल हो गया था। गाड़ी के पंजीकरण नंबर के आधार पर पुलिस ने राजस्थान के सहड़ निवासी अमित कुमार यादव को गिरफ्तार कर लिया। बाद में उसे पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया।

मेघवाल उरथान समिति की बैठक आज

रेवाड़ी। मेघवाल उरथान समिति हरियाणा के सचिव भूपेन्द्र शेखपुर ने बताया कि मेघवाल समाज की बैठक 20 जुलाई को सुबह 09:30 बजे बावल के बागवाला घोबीघाट में आयोजित की जाएगी। इस मीटिंग में सभी पदाधिकारीगण, महिला शक्ति एवं भारी संख्या में हजर होकर समाजहित में एक नई पहल में अपनी हिस्सेदारी एवं इस मुहिम में हिस्सा लेकर अपने विचार साझा करेंगे। मेघवाल उरथान समिति को मजबूत करने की दिशा में मीटिंग में चर्चा की जाएगी।

महिला पर हमले का आरोपी मेजा जेल

रेवाड़ी। विजय नगर में महिला पर जानलेवा हमले के आरोपी लिव इन पार्टनर को पुलिस ने कोर्ट में पेश करने के बाद जेल भेज दिया। रामसिंहपुरा निवासी मनीष महिला के साथ विजय कॉलोनी में रहा था। उसने गत बीवार की रात महिला पर चाकू से हमला कर दिया, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गई। पुलिस ने महिला को अस्पताल में दाखिल कराने के साथ ही आरोपी को गिरफ्तार कर लिया था। उसे कोर्ट में पेश किया गया, जहां से जेल भेजने के आदेश हुए।

नेशनल हाइवे से लेकर शहर तक की सड़कें हुईं बदहाल

बरसात ने बिगाड़ी सड़कों की सूरत, सड़क हादसों की आशंका बढ़ी, एक युवक हुआ शिकार

■ दुपहिया वाहन चालकों के लिए बढ़ रहा ज्यादा खतरा

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ रेवाड़ी

बरसात ने नेशनल हाइवे से लेकर शहर तक की सड़कों की सूरत बिगाड़ दी है। बरसात का सिलसिला जारी है। टूटी सड़कों से हादसों की आशंका बढ़ गई है, परंतु संबंधित विभागों की नौद नहीं टूट पा रही है। कसोला चौक के पास एक युवक टूटी सड़क के कारण हादसे का शिकार हो गया। एनएचएआई की ओर से दिल्ली-जयपुर नेशनल हाइवे पर पैच वर्क शुरू कराया जा चुका है, परंतु शहर की सड़कों की सुध नगर परिषद नहीं ले रही है। दिल्ली-जयपुर नेशनल हाइवे पर बनीपुर चौक के पास मेन रोड बंद होने के कारण यातायात का दबाव सर्विस रोड पर है। यह रोड बारिश के कारण बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था। इससे कई दिनों तक जाम की समस्या बनी रही। आखिरकार एनएचएआई ने सर्विस रोड पर



रेवाड़ी। हनुमान मंदिर के पास टूटी सड़क पर एकत्रित गंदा पानी, भाड़ावास गेट पर टूटी सड़क के गड्ढे में एकत्रित पानी, ब्रास मार्केट में भरे पानी से गुजरते वाहन।

पैचवर्क शुरू करा दिया। कसोला चौक के पास अभी भी गड्ढे बने हुए हैं। शहर के बावल रोड पर महाराणा प्रताप चौक के पास सड़क में गड्ढे बन चुके हैं। सरकुल रोड पर नाईवाली चौक, नारनौल रोड, कानोड गेट, धारुहेड़ा चुंगी व अंदरूनी इलाकों में भी सड़कों की हालत खराब हो चुकी है। प्रमुख मोती चौक बाजार व गोकल गेट के आसपास भी सड़कों में गड्ढे बन चुके हैं। शहर के ब्रास मार्केट में हाल ही में सीसी रोड का निर्माण बरेशानी दुपहिया वाहन चालकों को उठानी पड़ रही है। टूटी सड़कों

में आने वाले लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। नए बने रोड बाहरी रोड से पूरी तरह लिंक नहीं किए गए हैं। यहां गड्ढों में पानी भरा हुआ है, जिससे वाहनों का निकलना भी मुश्किल बना हुआ है। शहर के मांडल टाउन और सेक्टरों में भी कई जगहों पर सड़कों की हालत खराब है। कई जगह सड़कों पर गड्ढे बने हुए हैं, परंतु इनकी सुध लेने वाला कोई नजर नहीं आ रहा है। टूटी सड़कों के कारण सर्वाधिक परेशानी दुपहिया वाहन चालकों को उठानी पड़ रही है। टूटी सड़कों



रेवाड़ी। हनुमान मंदिर के पास टूटी सड़क पर एकत्रित गंदा पानी, भाड़ावास गेट पर टूटी सड़क के गड्ढे में एकत्रित पानी, ब्रास मार्केट में भरे पानी से गुजरते वाहन।

गड्ढे के कारण हादसे का शिकार हुआ कसोला चौक के निकट सड़क पर बने गड्ढे के कारण एक ट्रॉले ने बाइक सवार कंपनी कर्मचारी कसोली निवासी 28 वर्षीय अजय की मौत हो गई। अजय एक कंपनी में काम करता था। वह बाइक से अपने गांव जाते समय कसोला चौक के पास हादसे का शिकार हो गया। परिजन उसे गुरुग्राम के प्राइवेट अस्पताल ले गए, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। कसोला पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया। केस दर्ज करने के बाद ट्रॉला चालक की तलाश शुरू कर दी।

में बने गड्ढे बरसाती पानी एकत्रित होने के बाद दिखाई नहीं देते, जिससे इन गड्ढों में गिरकर दुपहिया वाहन चालक हादसों का शिकार हो जाते हैं। बार-बार हो रही बारिश से समस्या ज्यादा गंभीर हो रही है। इसके बाद भी कई दुपहिया



रेवाड़ी। हनुमान मंदिर के पास टूटी सड़क पर एकत्रित गंदा पानी, भाड़ावास गेट पर टूटी सड़क के गड्ढे में एकत्रित पानी, ब्रास मार्केट में भरे पानी से गुजरते वाहन।

जल्द सुधरेगी सड़कों की दशा नई सड़कों का निर्माण कराने के लिए टेंडर की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। जल्द प्रमुख सड़कों का निर्माण शुरू हो जाएगा। गड्ढों को भरने के लिए पैचवर्क कराने के लिए अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं। यह कार्य भी जल्द शुरू कराया जा रहा है। -प्लूम यादव, चेरमैन, नप।

कीचड़ ने भी किया लोगों को परेशान

बारिश के बाद शहर की सफाई व्यवस्था भी बदतर हो चुकी है। कई जगह सीवर लाइनों का पानी सड़कों पर फैल रहा है। बाजार में दूषित पानी से दुकानदारों और आमजन को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। दुकानों के सामने एकत्रित कीचड़ को खुद दुकानदार ही साफ करते नजर आते हैं। अंदरूनी कॉलोनी और मोहल्लों में भी सफाई व्यवस्था तार-तार हो चुकी है, परंतु इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। वाहन चालक गड्ढों में गिरकर हादसों का शिकार होते रहे हैं।

पार्ट टाइम जॉब के नाम पर ठगी करने के तीन आरोपी गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ रेवाड़ी

साइबर थाना पुलिस ने पार्ट टाइम जॉब के नाम पर मोटे मुनाफे का लालच देकर ठगी करने के मामले में तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों को कोर्ट में पेश करने के पूछताछ के लिए दो दिन के रिमांड पर लिया गया है। इन्होंने निवासी धीरज यादव ने अपनी शिकायत में बताया था कि गत वर्ष 5 अगस्त को उसने अपने फेसबुक अकाउंट पर एक विज्ञापन देखा था। उस पर क्लिक करने के बाद उसके टेलीग्राम अकाउंट पर एक मैसेज आया। जिसमें उसकी जन्मतिथि और पता पूछा गया था। कुछ देर बाद एक और टेलीग्राम



रेवाड़ी। गिरफ्तार किए गए आरोपी पुलिस टीम के साथ। फोटो: हरिभूमि

अकाउंट से मैसेज आया, जिसमें था। उसके पास एक लिंक भेजा गया। उसी दिन उससे एक ट्रेडिंग

यह आरोपी किए गए गिरफ्तार

पुलिस ने इस मामले में सिलिप्त तीन आरोपी राजस्थान के जिला जोधपुर के गांव टांडियाणा निवासी जेटू सिंह, जिला बाड़मेर के गांव इन्दौर निवासी आसु सिंह व जिला जोधपुर के गांव चान्दवाभाखर निवासी आदित्य सिंह को गिरफ्तार कर लिया है। प्रारंभिक पूछताछ के बाद इस बात का खुलासा हुआ है कि धीरज यादव के खाते से दो लाख रुपये जेटू सिंह के खाते में गए थे। जेटू सिंह ने आसु सिंह व आदित्य सिंह के कहने पर अपना खाता कमीशन के आधार पर आगे साइबर ठगों को उपलब्ध करवाया था। पुलिस ने आरोपियों को पेश अदालत करके पूछताछ के लिए दो दिन के पुलिस रिमांड पर लिया है।

अकाउंट पर एक रिव्यू सबमिट करवाया गया। इसके बदले उसे ट्रायल बेस पर 699 रुपये मिले। अगले दिन 6 अगस्त को उससे 10 हजार रुपये जमा करवाए गए। 30 रिव्यू सबमिट करने के बाद उसे करीब 17 हजार रुपये लौटाए गए। इसके बाद वह चंगुल में फंसता चला गया। कई ट्रैकिंग के जरिए

उसने करीब 4 लाख 92 हजार रुपये उनके अलग-अलग खातों में ट्रांसफर कर दिए। जब उसने पैसे निकालने का प्रयास किया, तो उससे और पैसे जमा कराने के लिए कहा गया। इसके बाद उसे साइबर ठगी का पता चला। साबर थाना पुलिस ने ठगी का मामला दर्ज करके जांच शुरू की थी।

‘रोड रूल्स, लाइफ टूल्स’ विषय को लेकर चलाया सड़क सुरक्षा अभियान

रेवाड़ी। हरियाणा राज्य विधिक सेवाएं प्राधिकरण पंचकुला के निर्देशानुसार व जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण रेवाड़ी के तत्वावधान में ‘रोड रूल्स, लाइफ टूल्स’ विषय पर कानूनी जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य आमजन को सड़क सुरक्षा, यातायात नियमों के पालन, एवं कानूनी प्रावधानों के प्रति जागरूक करना था। इस अभियान के अंतर्गत पैनल अधिवक्ता गोपेश नारायण व पैरा लीगल कॉलैटियर रमेश कुमार वशिष्ठ द्वारा विभिन्न सार्वजनिक स्थलों व यातायात चौराहों पर आम लोगों एवं वाहन चालकों से संवाद स्थापित कर उन्हें मोटर वाहन अधिनियम, ट्रैफिक नियमों, हेलमेट व सीट बेल्ट उपयोग की अनिवार्यता तथा यातायात नियमों के उल्लंघन पर लगने वाले दंड आदि के बारे में जानकारी प्रदान की गई। जन-जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से



वाहनों एवं सार्वजनिक स्थलों पर जागरूकता संदेशों से युक्त स्टीकर भी लगाए गए। यह अभियान स्थानीय नागरिकों, वाहन चालकों एवं राहगीरों द्वारा अत्यंत सराहा गया। लोगों ने कानून के प्रति सजग रहने एवं नियमों का पालन करने की प्रतिबद्धता भी व्यक्त की। यह कार्यक्रम जनमानस में यातायात के प्रति उत्तरदायित्व और जागरूकता बढ़ाने में एक प्रभावी पहल सिद्ध हुआ। जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण, रेवाड़ी का यह प्रयास भविष्य में भी इसी प्रकार जारी रहेगा।

मांगों को लेकर बिजली कर्मियों ने दिया धरना

■ एसडीओ ने मांगों पूरी करने के लिए चार दिन का समय मांगा था

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ बावल

बिजली निगम के कर्मचारियों ने शनिवार को मांगों को लेकर सब डिजिजन कार्यालय पर धरना देते हुए नारेबाजी की। कर्मचारियों ने मांगों को लेकर पहले मांग पत्र एसडीओ को सौंप चुके हैं, परंतु उनकी मांगों पर कोई विचार नहीं किया गया। धरने की अध्यक्षता बिजली कर्मचारी यूनियन के अध्यक्ष देवेन्द्र ने की। धरने को संबोधित करते



बावल। मांगों को लेकर धरना देते हुए बिजली कर्मचारी। फोटो: हरिभूमि

हए सचिव अमित कुमार ने बताया कि गत 14 जुलाई को एसडीओ का यूनियन ने एक मांग पत्र सौंपा था। इसमें बिजली कर्मचारियों को सफेदी उपकरण उपलब्ध कराने व

सभी बिजली शिकायत केंद्रों पर पर्याप्त कर्मचारी नियुक्त करने की मांग की गई थी। उनकी मांगों पर अभी तक कोई विचार नहीं किया गया है, जिस कारण यूनियन को

पुलिस की नशा मुक्त टीम रोज डोर टू डोर जाकर नशे के विरुद्ध लोगों को जागरूक कर रही

पुलिस ने नशे के प्रति लोगों को किया जागरूक

■ नशा ना करने की शपथ भी दिलवाई गई

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ रेवाड़ी

जिला पुलिस ने युवाओं व आमजन को नशे के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक करने के लिए और खेलों से जोड़ने के लिए विशेष अभियान चलाया हुआ है। जिसका मुख्य उद्देश्य युवाओं व आमजन को नशे की बुराईयों से अवगत करवाना तथा नशे के आदी युवाओं को समाज की मुख्यधारा में जोड़ना है। जिला पुलिस की नशा मुक्त टीम रोज डोर

टू डोर जाकर नशे के विरुद्ध लोगों को जागरूक कर रही है। पुलिस टीम लोगों से उनके वार्ड/गांव में नशा करने वालों की जानकारी एकत्रित करके तथा उनकी कार्रवाई करवाकर नशा छोड़ने के लिए प्रेरित कर रही है। इस अभियान के तहत जिला पुलिस की नशा मुक्त टीम द्वारा आज शनिवार को गवर्नमेंट स्कूल गांव टिकला, एसके सीनियर सेकेंडरी स्कूल पनवाड़ व गांव किशनपुर का दौरा कर स्टूडेंट्स/आमजन को नशे से दूर रहने तथा शिक्षा व खेलों से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। नशा मुक्त टीम



रेवाड़ी। स्कूली बच्चों को नशे के प्रति जागरूक करते हुए पुलिस टीम। फोटो: हरिभूमि

नशे से बचाव करना जरूरी: एसपी

पुलिस अधीक्षक हेमेंद्र कुमार मीणा ने बताया कि नशा एक ऐसी बुराई है, जिससे व्यक्ति का अनमोल जीवन समय से पहले ही मौत का शिकार हो जाता है। नशा करने वाला व्यक्ति अपने साथ साथ पूरे परिवार का जीवन खराब कर देता है। उन्होंने कहा कि सबसे पहले युवा पीढ़ी को नशे से बचना होगा। उन्होंने कहा कि पुलिस के इस अभियान से प्रेरित होकर जहां युवा शिक्षा और खेल गतिविधियों की ओर अग्रसर हो रहे हैं वहीं पर अनेक नशा बस्त युवकों ने नशा छोड़ने की पहल भी की है, जिनका स्थानीय प्रशासन का मदद से इलाज करवाकर उन्हें फिर से समाज की मुख्यधारा में शामिल किया गया है।

उसे इलाज के लिए प्रेरित किया है। इस अभियान के दौरान नशा मुक्त टीम द्वारा अब तक नशे से पीड़ित 55 लोगों की पहचान की है जो किसी न किसी प्रकार के नशे से पीड़ित है। इसके अलावा 12 नशा पीड़ितों का इलाज करवाया गया है।

शादी का झांसा देकर यौन शोषण का आरोप, युवक के खिलाफ केस दर्ज

कोसली। क्षेत्र के गांव की एक युवती ने गांव के ही एक युवक पर शादी करने का झूठा वादा करके यौन शोषण करने का आरोप लगाते हुए कोसली थाने में मामला दर्ज करवाया है। युवती ने कहा है गांव का ही एक युवक पिछले 4 साल से उसके साथ दुष्कर्म करता आ रहा है। अब वह बालिग हो चुकी है। युवती के अनुसार युवक ने उससे शादी का वादा किया था मगर अब शादी नहीं कर रहा। हाल ही में युवक उसे बहला फुसलाकर अपने साथ ले गया तथा 3 से 16 जुलाई तक 13 दिन तक कई जगहों पर रखा तथा यौन संबंध बनाए। उसने शादी की बात कही तो उसने साफ इंकार कर दिया तथा उसे घर छोड़कर चला गया। पुलिस ने युवती की शिकायत पर युवक के विरुद्ध सीएनएस व पोक्सो एक्ट की धाराओं में मामला दर्ज कर लिया है।

एक पेड़ की तरह है निवेश, अभी लगाएंगे तो भविष्य में देगा छाया

● निवेश की यात्रा शुरू कर रहे हैं तो जान लें कुछ जरूरी नियम ● सबसे पहले निवेश के लिए लक्ष्य लेकर चलें और रुकें नहीं ● हमेशा लंबी अवधि के लिए निवेश करें और उसे हर साल बढ़ाते जाएं

निवेश मंत्रा

विनोद कोशिक

निवेश एक पेड़ की तरह है। यदि आप इस समय निवेश रूपी पौधा रोपेंगे तो यह बुढ़ापे में आपको छाया देगा और भविष्य को सुरक्षित रखेगा। अगर आप भी अपनी निवेश यात्रा शुरू करने जा रहे हैं या कर चुके हैं तो कुछ नियमों को अपने जीवन में उतार लें। इससे आप आसानी से अपने सपने को पूरा कर सकेंगे। अपने गोल पूरे कर सकेंगे। सबसे इन्वेस्टमेंट यानी निवेश शब्द तो बहुत बार सुना होगा। चाहे परिवार की बातचीत, समाचार अपडेट या रोजमर्रा के जीवन में भी, लेकिन क्या आप कभी यह सोचने से रोके हैं कि इसका क्या मतलब है? सबसे सरल अर्थ में, इन्वेस्टमेंट आज पैसे, समय या ऊर्जा देने के बारे में है, आशा है कि यह भविष्य में कुछ और बढ़ेगा। कल्पना करें कि यह एक पौधा रोपने की तरह है, आप कोशिश करते हैं, इसे सावधानी से पोषण करते हैं, यह जानकर कि किसी दिन यह आपको छाया, फल या शायद कुछ सुंदरता भी प्रदान करेगा। यही इन्वेस्टमेंट यानी निवेश का मंत्र है। हमेशा लंबी अवधि के लिए निवेश करें और उसे हर साल बढ़ाते जाएं।



आखिर क्या है निवेश

निवेश एक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति या संगठन अपने पैसे को विभिन्न प्रकार की संपत्तियों या वित्तीय साधनों में लगाते हैं, जिससे उन्हें भविष्य में आय या लाभ प्राप्त हो सके। निवेश का उद्देश्य आमतौर पर अपने पैसे को बढ़ाना, आय अर्जित करना, या भविष्य के लिए बचत करना होता है। निवेश एक एसेट और/या एक आइटम है जो या तो अप्रिंशिएशन प्राप्त करने या इनकम जनरेट करने के लिए अर्जित किया जाता है। इन्वेस्टमेंट में वृद्धि एक निश्चित अवधि में एसेट/आइटम के मूल्य में वृद्धि है। इससे स्टॉक खरीदना, रियल एस्टेट में इन्वेस्ट करना, गोल्ड खरीदना, या साइड बिजनेस शुरू करना भी हो सकता है। प्रत्येक विकल्प में वृद्धि की क्षमता होती है, विशेष रूप से अगर अच्छी तरह से मैनेज किया जाता है और हां, इसमें कुछ जोखिम शामिल हैं- वहां कोई आश्चर्य नहीं है, लेकिन ये इन्वेस्टमेंट वेल्थ-बिल्डिंग के अक्सर प्रदान कर सकते हैं।

निवेश के प्रकार

- वित्तीय निवेश : इसमें शेयर, बॉन्ड, म्यूचुअल फंड, और अन्य वित्तीय साधन शामिल हैं।
- वास्तविक निवेश : इसमें अचल संपत्ति, सोना, और अन्य भौतिक संपत्तियां शामिल हैं।
- व्यवसायिक निवेश : इसमें व्यवसाय शुरू करने या व्यवसाय में हिस्सेदारी खरीदने के लिए निवेश करना शामिल है।

निवेश के लाभ

- आय अर्जित करना : निवेश से आय अर्जित करने का अवसर मिलता है।
- पैसे का बढ़ना : निवेश से पैसे का मूल्य बढ़ सकता है।
- भविष्य के लिए बचत : निवेश से भविष्य के लिए बचत करने में मदद मिलती है।
- विविधीकरण : निवेश से पोर्टफोलियो का विविधीकरण होता है, जिससे जोखिम कम होता है।
- कैपिटल प्रिजर्वेशन : जब आप इन्वेस्ट करते

निवेश का महत्व

- इन्वेस्टमेंट आपके पैसे को महंगाई से बचा सकता है।
- आपको आय अर्जित करने में मदद कर सकता है।
- आपको अपने लॉन्ग-टर्म लक्ष्यों के करीब ला सकता है।
- समय के साथ अपनी कैश वैल्यू खोने के बजाय, इन्वेस्टमेंट आपको रियल वेल्थ बनाने में मदद कर सकता है
- कंपाउंडिंग होती है-जहां आपका रिटर्न गुणा होता है और समय के साथ अजाना रिटर्न जनरेट करना शुरू करता है।
- इसलिए, चाहे रिटायरमेंट के लिए बचत हो या उस ड्रीम वेकेशन, इन्वेस्टमेंट आपके सभी वर्तमान और भविष्य के लक्ष्यों को आसानी से पूरा कर सकता है।

हैं, तो आप अपने पैसे को सुरक्षित रखते हैं और समय के साथ वैल्यू को खोने से रोकते हैं।

निवेश के जोखिम

- बाजार का जोखिम : बाजार की स्थितियों में बदलाव से निवेश का मूल्य प्रभावित हो सकता है।
- क्रेडिट जोखिम : उधारकर्ता के डिफॉल्ट करने से निवेश का मूल्य प्रभावित हो सकता है।
- लिक्विडिटी जोखिम : निवेश को आसानी से बेचने में समस्या हो सकती है।
- जोखिम : मुद्रास्फीति से निवेश का मूल्य प्रभावित हो सकता है।

ऐसे करें निवेश

- लक्ष्यों को परिभाषित करें : सोचें कि आप अपने इन्वेस्टमेंट को प्राप्त करने के लिए क्या चाहते हैं।
- अपने जोखिम का आकलन करें : सोचें कि आप नौद को खोए बिना कितना जोखिम ले

निवेश से पहले यह जान लें जोखिम सहिष्णुता: आप अपने इन्वेस्टमेंट के कुछ या सभी को खोने के विचार से कितना आरामदायक हैं?

समय सीमा: क्या आप शॉर्ट टर्म या लॉन्ग टर्म के लिए इन्वेस्ट करना चाहते हैं?

फाइनेंशियल लक्ष्य: आप अपने इन्वेस्टमेंट के माध्यम से क्या प्राप्त करना चाहते हैं?

विविधता: विभिन्न क्षेत्रों में अपने इन्वेस्टमेंट को फैलाकर जोखिम को मैनेज करने में मदद मिल सकती है, जैसे कि आपके सभी अंडे एक ही टोकरी में न डालें।

इसलिए करें इन्वेस्टमेंट महंगाई से सुरक्षा: इन्वेस्टमेंट अक्सर महंगाई की तुलना में तेजी से बढ़ते हैं, जिससे आपके पैसे की वैल्यू को सुरक्षित रखा जाता है।

पैसिव आय जनरेट करें: कुछ इन्वेस्टमेंट, जैसे डिविडेंड-मुगतान स्टॉक, नियमित केश फ्लो प्रदान कर सकते हैं।

फाइनेंशियल लक्ष्य प्राप्त करें: इन्वेस्टमेंट आपको बड़े जीवन की घटनाओं, जैसे घर खरीदना या आराम से रिटायर होना आदि के लिए बचत करने में मदद करता है। इन्वेस्ट करना शुरू करना कभी भी बहुत जल्दी नहीं है, कितनी जल्दी आप शुरू करते हैं, कंपाउंडिंग का लाभ मिलेगा।

ऐसे करता है काम

आप किसी कंपनी (एक एसेट) में शेयर खरीदने का निर्णय लेते हैं, जिसका आपको विश्वास है कि आपके पास एक आशाजनक भविष्य है। अगर कंपनी की वैल्यू बढ़ती है, तो आपके शेयरों की कीमत भी बढ़ती है या शायद आप किसी ऐसे क्षेत्र में भूमि (संपत्ति) का लॉट खरीदते हैं जिसे आप सोचते हैं कि समय के साथ महंगा हो जाएगा। दोनों मामलों में, आपका पैसा काम करने के लिए लगाना जाता है, और अगर चीजें अच्छी तरह से चलती हैं, तो यह आपको लगातार ध्यान दिए बिना लौटना लाता है।

- अपने इन्वेस्टमेंट चुनें : आपके लिए सही महसूस करने वाले स्टॉक, बॉन्ड, रियल एस्टेट और फंड का मिश्रण चुनें।
- नियमित रूप से इन्वेस्ट करें : हर महीने एक निश्चित राशि अलग रखने पर विचार करें यह पहले खुद को मुक्ताना करने की तरह है।

ऐसे करता है काम

आप किसी कंपनी (एक एसेट) में शेयर खरीदने का निर्णय लेते हैं, जिसका आपको विश्वास है कि आपके पास एक आशाजनक भविष्य है। अगर कंपनी की वैल्यू बढ़ती है, तो आपके शेयरों की कीमत भी बढ़ती है या शायद आप किसी ऐसे क्षेत्र में भूमि (संपत्ति) का लॉट खरीदते हैं जिसे आप सोचते हैं कि समय के साथ महंगा हो जाएगा। दोनों मामलों में, आपका पैसा काम करने के लिए लगाना जाता है, और अगर चीजें अच्छी तरह से चलती हैं, तो यह आपको लगातार ध्यान दिए बिना लौटना लाता है।



ग्रीन एफडी : सुरक्षित निवेश के साथ पर्यावरण संरक्षण में भी करें योगदान

अभी सभी बैंक ग्रीन डिपॉजिट की सुविधा नहीं दे रहे हैं। फिर भी, कई बड़े सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बैंकों ने इस दिशा में कदम उठाया है। मोहित गांग के मुनाबिक, एसबीआई, बैंक ऑफ इंडिया, एक्सिस बैंक, केनरा बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, आईडीएफसी फर्स्ट बैंक, एयू.एस.एल. फाइनेंस बैंक, इंडियन ओवरसीज बैंक और बैंक ऑफ बड़ोदा जैसे बैंक ग्रीन डिपॉजिट योजनाएं शुरू कर चुके हैं।

बचत

बिजनेस डेस्क

जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण जैसी चुनौतियों से जूझ रही दुनिया अब निवेश के तरीकों में भी धीरे-धीरे बदलाव कर रही है। इन्होंने नए नए तरीकों के बीच भारत में अब एक नया फाइनेंशियल प्रोडक्ट तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। इस लोकप्रिय प्रोडक्ट को नाम दिया है ग्रीन डिपॉजिट। यह एक ऐसा निवेश विकल्प है, जो न केवल सुरक्षित और अच्छा रिटर्न देता है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी अहम भूमिका निभाता है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने जून 2023 में ग्रीन डिपॉजिट के लिए एक स्ट्रक्चर जारी किया था, जिसमें बैंकों को जमा पैसे को सिर्फ ग्रीन प्रोजेक्ट्स में लगाने की अनुमति दी गई है। इस प्रोजेक्ट्स में मुख्य रूप से सौर ऊर्जा, इलेक्ट्रिक गाड़ियां, पानी और वेस्ट मैनेजमेंट आदि शामिल होते हैं। ग्रीन डिपॉजिट एक सामान्य फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) की तरह ही है, लेकिन इसका अंतर कहीं अधिक बड़ा और पॉजिटिव है। इसमें बैंकों को सालाना रिपोर्टिंग और थर्ड पार्टी ऑडिट जैसी पारदर्शिता की शर्तें पूरी करनी होती हैं, जिससे निवेशकों को भरोसा मजबूत होता है। स्टेट बैंक, एक्सिस, यूनियन बैंक जैसे कई बड़े बैंक इस विकल्प को पेशकश कर रहे हैं। अगर आप एक ऐसा निवेश चाहते हैं जो आपको आर्थिक लाभ के साथ-साथ धरती को भी लाभ पहुंचाए, तो ग्रीन डिपॉजिट एक समझदारी भरा कदम हो सकता है।

यह कैसे करता है काम
ग्रीन डिपॉजिट में निवेशक अपने पैसे को बैंक में एक निश्चित समय के लिए एफडी की तरह जमा करते हैं, और बदले में उन्हें उसका ब्याज मिलता है, लेकिन इस योजना की खासियत यह है कि जमा किए गए पैसे का इस्तेमाल केवल उन परियोजनाओं में किया जाता है, जो पर्यावरण के लिए फायदेमंद हैं। इन परियोजनाओं में सौर और पवन ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहन, जलवायु परिवर्तन से बचने के लिए ही रहे काम, पानी, वेस्ट मैनेजमेंट और ग्रीन बिल्डिंग आदि शामिल हो सकते हैं। बैंकिंग एक्सपर्ट कहते हैं, 'जब कोई व्यक्ति या संस्था ग्रीन डिपॉजिट में निवेश करता है, तो बैंक उस पैसे को ऐसी परियोजनाओं के लिए लोन देने या निवेश करने में उपयोग करता है।'

ऐसे समझें उदाहरण
उदाहरण के लिए, यह पैसा सौर ऊर्जा प्लांट बनाने, इलेक्ट्रिक गाड़ियां बनाने आदि को बनाने या फिर उसके लिए रिसर्च में इस्तेमाल किया जा सकता है। भारतीय रिजर्व बैंक ने यह सुनिश्चित करने के लिए सख्त नियम बनाए हैं कि इन फंड्स का उपयोग केवल इन्होंने चीजों के लिए ही हो। बैंकों को हर साल इन फंड्स के उपयोग और उनके होने वाले पर्यावरणीय प्रभाव की जानकारी सार्वजनिक करनी होती है।

क्या कहती हैं जानकार
ग्रीन डिपॉजिट में निवेश की प्रक्रिया एफडी की तरह ही होती है। निवेशक को एक निश्चित पैसा (जो आमतौर पर 5,000 रुपये से शुरू होकर 10 करोड़

रुपये तक हो सकती है) जमा करना होता है। जमा करने का समय और ब्याज दर बैंक के नियमों पर निर्भर करती है। इस पैसे को डीआईसीजी की तहत बीमा किया जाता है, जिससे निवेशक का पैसा सुरक्षित रहता है।

नियमों और पारदर्शिता
दूसरा अंतर नियमों और पारदर्शिता में है। ग्रीन डिपॉजिट पर भारतीय रिजर्व बैंक की पूरी नजर रहती है और इन्हें बैंक की पूरी जानकारी देने और हर साल ऑडिट करवाना पड़ता है। इसके विपरीत, एफडी में ऐसी कोई शर्त या पारदर्शिता की जरूरत नहीं होती। ब्याज दरों की बात करें तो ग्रीन डिपॉजिट की दरें सामान्य एफडी के बराबर या कभी-कभी थोड़ी अधिक हो सकती हैं, क्योंकि बैंक पर्यावरण के प्रति जागरूक निवेशकों को आकर्षित करने के लिए कभी-कभी अच्छे दरें ऑफर करते हैं। एक और जरूरी अंतर नैतिक प्रभाव का है। ग्रीन डिपॉजिट में निवेश करके व्यक्ति पर्यावरण संरक्षण और जलवायु परिवर्तन से निपटने में योगदान देता है, जो इसे एक नैतिक और जिम्मेदार निवेश विकल्प बनाता है। सामान्य एफडी में ऐसा कोई पर्यावरणीय या सामाजिक प्रभाव नहीं होता।

ग्रीन डिपॉजिट के क्या फायदे
ग्रीन डिपॉजिट का सबसे बड़ा फायदा यह है कि यह निवेशकों को पर्यावरण संरक्षण में योगदान देने का मौका देता है। अगर आप जलवायु परिवर्तन या प्रदूषण जैसी समस्याओं को लेकर चिंतित हैं, तो यह योजना आपके पैसे को सही दिशा में लगाने का एक तरीका है। इसके अलावा, इसकी ब्याज दरें सामान्य एफडी की तुलना में प्रतिस्पर्धी होती हैं, जिससे निवेशक को आर्थिक लाभ भी मिलता है। यह योजना उन लोगों के लिए भी खास है, जो अपने निवेश को पर्यावरण, सामाजिक और शासन मानकों के आधार पर करना चाहते हैं। ग्रीन डिपॉजिट के जरिए निवेशक अपने पोर्टफोलियो में विविधता ला सकते हैं और साथ ही पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी भी निभा सकते हैं। बैंकों द्वारा हर साल दी जाने वाली रिपोर्ट और तीसरे पक्ष के ऑडिट से निवेशकों को यह भरोसा रहता है कि उनका पैसा सही जगह पर इस्तेमाल हो रहा है। साथ ही, डीआईसीजी की तहत बीमा होने से यह निवेश पूरी तरह सुरक्षित भी है।'

एफडी से कितना अलग है ग्रीन डिपॉजिट

ग्रीन डिपॉजिट और एफडी में कई समानताएं हैं। हालांकि, कुछ बुनियादी अंतर दोनों को अलग बनाते हैं। सबसे बड़ा अंतर यह है कि ग्रीन डिपॉजिट में जमा किए गए पैसे का इस्तेमाल सिर्फ पर्यावरण को लाभ पहुंचाने वाले परियोजनाओं में किया जाता है, जबकि एफडी में जमा पैसे का इस्तेमाल बैंक अपने सामान्य कारोबार, लोन देने या दूसरे निवेश में उपयोग कर सकता है। इस तरह ग्रीन डिपॉजिट में निवेश करने वाला हर व्यक्ति यह दवावा कर सकता है कि उसका पैसा पर्यावरण से जुड़ी परियोजनाओं के लिए हो रहा है।

जवानी में कर लें इतना निवेश की बुढ़ापे में न गिननी पड़े परेशानियां

जानकारी

बिजनेस डेस्क

अगर आप भी रिटायरमेंट प्लानिंग कर रहे हैं तो जरा ध्यान दें। आप जितना जल्दी निवेश शुरू करेंगे। उतना ही बुढ़ापे में सुरक्षित होंगे। इसलिए जरूरी है कि जवानी में निवेश कर लें कि बुढ़ापे में परेशान न होना पड़े। इसके लिए आप रूल ऑफ 70 के फार्मूले को भी फॉलो कर सकते हैं। इससे पता चल जाएगा कि बुढ़ापे अच्छे से काटने के लिए आपको कितने धन की जरूरत होगी। आज की अर्थव्यवस्था में पैसा सबसे बड़ी जरूरत बन चुका है। अगर जवानी में गलत फैसले लिए गए, तो बुढ़ापे मुश्किल हो सकता है। इसलिए जरूरी है कि युवावस्था से ही रिटायरमेंट के लिए मजबूत फंड बनाना शुरू करें, ताकि भविष्य में आर्थिक तंगी से बचा जा सके और जीवन आरामदायक बना रहे।

हमेशा महंगाई का ध्यान रखें

आप भी सोचते होंगे कि अगर आपके पास एक करोड़ रुपये हों, तो जिंदगी की सारी जरूरतें पूरी हो जाएंगी, लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि यही रकम आने वाले वक्त में आपके लिए कितनी मायने रखेगी। आज जो रकम बड़ी लगती है, वो कल को शायद उतनी काम की न हो। महंगाई हर साल धीरे-धीरे बढ़ती रहती है और इसके साथ हमारी जरूरतों की कीमत भी। ऐसे में अगर आपने भविष्य की प्लानिंग सही से नहीं की, तो रिटायरमेंट के बाद दिक्कतें हो सकती हैं। कई बार हम यह मान लेते हैं कि जितना पैसा आज हमें काफी लग रहा है, वही आगे भी काफी रहेगा, लेकिन अर्थात्वात् इससे बिल्कुल अलग है। इसलिए जरूरी है कि आप आज ही यह समझें कि आपकी रकम भविष्य में कितनी टिक पाएगी और उसी के हिसाब से अपनी बचत और निवेश की योजना बनाएं।



ऐसे जानें 'रूल ऑफ 70'

आपके पैसे की वैल्यू भविष्य में कितनी रह जाएगी, यह जानने के लिए 'रूल ऑफ 70' एक सरल तरीका है। इसमें आपको बस मौजूदा महंगाई दर जाननी होती है। जब आप 70 को उस महंगाई दर से भाग देंगे, तो जो संख्या निकलेगी, वह यह बताएगी कि कितने साल में आपके पैसे की आधी हो जाएगी। उदाहरण के लिए, अगर महंगाई दर 7% है, तो 70/7=10 साल। यानी 10 साल में आपके 1 करोड़ की वैल्यू 50 लाख जैसी हो जाएगी।

क्यों जरूरी है सही फाइनेंशियल प्लानिंग

लोग अक्सर सोचते हैं कि एक तय रकम जोड़ लेना ही काफी है, लेकिन ये महंगाई के असर को नजरअंदाज कर देते हैं। केवल सेविंग्स करना काफी नहीं है, आपको यह भी समझना होगा कि वो रकम भविष्य में क्या वैल्यू रखेगी। रूल ऑफ 70 जैसे सिंपल फॉर्मूले से आप अपनी योजना को रियलिस्टिक बना सकते हैं। इससे आपको साफ नजर आएगा कि भविष्य में कितना पैसा वाकई जरूरी होगा।

रूल ऑफ 70 से जानिए बुढ़ापे में कितना पैसा होगा काफी

- आज की अर्थव्यवस्था में पैसा सबसे बड़ी जरूरत बन चुका
- जवानी में गलत फैसले लिए गए, तो बुढ़ापे मुश्किल होगा
- युवावस्था से ही रिटायरमेंट को मजबूत फंड बनाना शुरू करें
- अच्छा फंड भविष्य में आर्थिक तंगी से बचाएगा, जीवन आरामदायक बनेगा

स्मार्ट प्लानिंग

बुढ़ापे में आर्थिक तंगी से बचने के लिए युवावस्था से ही बचत और निवेश शुरू करें। हर महीने आय का कम से कम 20% रिटायरमेंट फंड में डालें। एसआईपी, पीपीएफ, और म्यूचुअल फंड जैसे विकल्प अपनाएं। महंगाई दर को ध्यान में रखते हुए फंड टारगेट तय करें। रूल ऑफ 70 से समझें पैसे की घटती वैल्यू और उसी अनुसार लॉन्ग टर्म प्लान तैयार करें।

सही लक्ष्य तय करें

बुढ़ापे में आर्थिक तंगी से बचने के लिए जरूरी है कि आप जल्द से जल्द निवेश शुरू करें। नियमित रूप से अपने फाइनेंशियल टारगेट्स की समीक्षा करें। बाजार की स्थितियों और महंगाई के हिसाब से अपनी रणनीति में बदलाव करते रहें। याद रखें, समय के साथ रुपये की वैल्यू घटती है, लेकिन सही प्लानिंग से आप अपनी भविष्य की जरूरतों को पूरा कर सकते हैं।

विकल्पों का विश्लेषण

निवेश की प्लानिंग एक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति या संगठन अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निवेश रणनीति तैयार करते हैं। इसमें निवेश के उद्देश्यों, जोखिम सहनशक्ति, समय सीमा, और निवेश विकल्पों का विश्लेषण करना शामिल है। निवेश के उद्देश्यों को निर्धारित करना, जैसे कि आय अर्जित करना, पैसे का बढ़ना, या भविष्य के लिए बचत करना। निवेश की प्लानिंग एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो व्यक्ति या संगठन को अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद कर सकती है।

माना जा रहा है कि जब प्रतिस्पर्धा सीमित होती है तो मूल्य निर्धारण पारदर्शी नहीं रह जाता। इससे परियोजना की लागत अनावश्यक रूप से बढ़ने की आशंका रहती है। ईपीएफओ के टेंडर में अगर अधिक से अधिक कंपनी हिस्सा लेगी तो इसका लाभ उन्हें ही होगा और प्रतिस्पर्धा की वजह से ईपीएफओ को कम लागत में एक बेहतर सेवा प्रदाता कंपनी की सेवा मिलेगी।



ईपीएफओ के डिजिटल प्लेटफॉर्म में हो रहा बदलाव, आखिर क्या होगा असर

बिजनेस डेस्क

देश के 27 करोड़ से अधिक कामगारों की बचत की संरक्षक संस्था के रूप में कार्य कर रही कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने 14 जुलाई 2025 को अपने आईटी सिस्टम (ईपीएफओ प्लेटफॉर्म) पर व्यापक बदलाव की तैयारी शुरू कर दी है। स्वभाविक है कि इस बदलाव से लोगों पर व्यापक असर भी दिखाई देगा। कुछ राहत मिलेगी तो कुछ खतरे भी बढ़ सकते हैं। ईपीएफओ के इस बदलाव से जुड़ी हालिया प्रक्रिया विशेषकर एजेंसी के चयन हेतु जारी एक्सप्रेशन ऑफ इंटेरेस्ट (ईओआई) को लेकर विशेषज्ञों और उद्योग जगत ने पारदर्शिता, निष्पक्षता और संभावित पक्षपात को लेकर गहरी चिंता जताई है। एक्सप्रेशन ऑफ इंटेरेस्ट दस्तावेज में एक प्रमुख शर्त यह है कि बोलीदाता ने प्रस्तावित कोर बैंकिंग सोल्यूशन (सीबीएस) को किसी अनुसूचित कॉर्पोरेट बैंक में लागू किया हो। पहली नजर में यह

एक सामान्य, अनुभव आधारित मानदंड लगता है, लेकिन विशेषज्ञों के अनुसार यह शर्त ईपीएफओ की वास्तविक आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं है। खातों का रख-रखाव, अंशदान प्रबंधन, पेंशन का वितरण आदि हैं। इसके लिए एक मजबूत, स्केलेबल और यूजर-फ्रेंडली डिजिटल प्लेटफॉर्म जरूरी है, लेकिन इसके लिए कोर बैंकिंग सोल्यूशन (सीबीएस) की अनिवार्यता अप्रासंगिक मानी जा रही है। इसका कारण ये है कि ईपीएफओ का काम कोर बैंकिंग से संबंधित नहीं है। ईओआई की भाषा से यह प्रतीत होता है कि बैंकिंग क्षेत्र को सेवा देने वाली कंपनी को प्राथमिकता दी जा रही है। प्री-बिड मीटिंग में शामिल कंपनियों ने यह भी ये सवाल उठाये किया कि दस्तावेज में वर्णित तकनीकी विशिष्टताएँ एक कंपनी विशेष की क्षमताओं से काफी नैद खती हैं। कर्मचारियों ने ईपीएफओ पोर्टल पर क्वेरी जेनेरेट कर अपनी चिंता व्यक्त की लेकिन ईपीएफओ ने कंपनियों के सभी आपत्तियों को दफिनार कर दिया।

नवाचार की राह में बाधा

ईओआई की शर्तों से कई प्रतिष्ठित कंपनियां इस काम के लिए बिड की करने की प्रक्रिया से बाहर हो सकती हैं, खासकर निम्नोले डिजिटल गवर्नेंस और सार्वजनिक सेवाओं के लिए बेहतरीन समाधान विकसित किए हैं लेकिन बैंकिंग सीबीएस पर काम नहीं किया है। ईओआई बैंक के बीच में भाग लेने वाली प्रमुख कंपनियां टीसीएस, इन्फोसिस, विप्रो, सीआईटीपीएल, एडवैन्सिएस, एचसीएल सॉफ्टवेयर और फिन्सिल थी। जबकि केवल एक-दो कंपनियां ही सीबीएस का अनुभव रखती हैं।

इस पर क्या है विशेषज्ञों की राय

ईपीएफओ कोई बैंक नहीं

ईपीएफओ कोई बैंक नहीं है। इसकी कार्यपणनी सार्वजनिक सेवा मंच जैसी है। ऐसे में बैंकिंग सीबीएस की अनिवार्यता तकनीकी दृष्टि से गैरजरूरी और रणनीतिक रूप से ग़मक है। -पवन दुग्गल, डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर एवं सायबर सुरक्षा विशेषज्ञ

उद्देश्य समाधान ढूंढना नहीं

यह आरएफपी किसी खास उत्पाद के लिए रिवर्स इंजीनियरिंग लगती है। ये बहुत ही रिस्की/विट है एवं इसका उद्देश्य समाधान ढूंढना नहीं, बल्कि समाधान में किसी खास बोलौदाता (बिडर) को लाभ पहुंचाना है। -अनूप प्रकाश अवस्थी, टेक्नोलॉजी एडवोकेट, सुप्रीम कोर्ट।

नवाचार-विरोधी भी

- डिजिटल एवं आईटी के काम के लिए टेंडर की प्रक्रिया में हिस्सा लेने वाली एक प्रमुख कंपनी एमनेक्स टेक्नोलॉजी का कहना है कि यह सिर्फ खराब खरीद प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह नवाचार-विरोधी भी है। यह सरकार के 'मेक इन इंडिया' और 'ओपन इनोवेशन' के मूल सिद्धांतों के भी खिलाफ है।
- वहीं वित्त मंत्रालय में विरिष्ठ सलाहकार के पद पर काम कर चुके एक अधिकारी ने बताया कि टेंडर प्रक्रिया में किसी विशेष शर्त को जायदा पहुंचाने के लिए शर्तों का निर्धारण जीएफआर एवं सौदीबी के नियमों का उल्लंघन है। उनके मुताबिक, अगर प्रतियोगिता का बयार सीमित होगा, तो बोली की कीमतें बाजार के अनुरूप नहीं होंगी।

ईपीएफओ के लिए आगे की राह

ईओआई जमा करने की अंतिम तिथि जैसे-जैसे नजदीक आ रही है, ईपीएफओ पर यह दबाव बढ़ रहा है कि वह इस प्रक्रिया की समीक्षा करे, और योग्यताओं को कार्य-आधारित और समाधान-उन्मुख तरीके से परिभाषित करे। साथ ही इस प्रक्रिया में तकनीकी रिपोजेटेशन को प्रमुखता दी जाए। मूल्यकन की प्रक्रिया में विविध पारदर्शी मानदंड जोड़े जाएं साथ ही पूरी प्रक्रिया में निष्पक्ष दृष्टिकोण अपनाया जाए।

इस माह भगवान शिव की उपासना विशेष फलदायी, एक लौटा जल से ही

सावन में शुभ फल के संकेत भी देते हैं भगवान शिव, आस्था के माह में सपने भी देते हैं अच्छे संकेत, इस माह में भोलेनाथ की उपासना विशेष फलदायी



रेवाड़ी। खोरी बस स्टैंड के पास लगा कांवड़ सेवा शिविर।

कि भोले बाबा सावन में एक मात्र लोटे जल से प्रसन्न हो सकते हैं। शिवलिंग में पूरी श्रद्धा के साथ अगर कोई एक लोटा जल चढ़ा दे, तो

शंकर जी उसकी हर एक मुद्रा पूरी कर देते हैं। शिवभक्त सावन माह में भोले नाथ को प्रसन्न करने के लिए विभिन्न उपाय अपनाते हैं। ऐसे ही

अगर सावन माह में किसी व्यक्ति को ये संकेत नजर आए, तो समझ लें कि उसके ऊपर भोले बाबा की विशेष कृपा है। ज्योतिषाचार्य का कहना है कि यदि अगर किसी व्यक्ति को सपने में किसी भी रूप में शिव जी या उनसे संबंधित शिवलिंग, गंगा, पर्वत आदि के दर्शन हो रहे हैं, कभी अचानक से डमरू की आवाज या कहीं त्रिशूल का दिख जाए। बार-बार भगवान शिव का कोई भजन या ओंम नमः शिवाय का जाप सुनाई दे तो समझना चाहिए कि उस पर भगवान शिव की विशेष कृपा है।

भौतिक चीजों का आकर्षण होने लगे कम

उनका कहना है कि बचपन से बूढ़ापे तक अक्सर हम भौतिक चीजों के पीछे ही भागते रहते हैं। महंगी गाड़ी, कपड़े, शॉपिंग, दिखावा और स्पर्धाक यही सब चलता रहता है। लेकिन जो व्यक्ति शिव तत्व की ओर बढ़ने लगता है, उसमें इन चीजों के प्रति आकर्षण कम होने लगता है। यदि व्यक्ति इस लेवल पर पहुंच जाए, तो समझ लीजिएगा कि आप शिव की ओर बहुत हद तक बढ़ चुके हैं। मनोज शर्मा का कहना है कि

जब अकेलापन भक्त को पसंद आने लगे

उनका कहना है कि व्यक्ति जब अंदर से आध्यात्मिक होने लगता है, तो सबसे पहले उसका जुड़ाव बाहरी दुनिया से कम और भीतरी दुनिया से ज्यादा होने लगता है। यदि वह ज्यादा वक्त बिताने लगे है, बाहरी दुनिया के दिखावे अब आपको अपनी तरफ आकर्षित नहीं करते, तो यह सबसे बड़ा संकेत है कि वह शिव की ओर बढ़ रहा है। ज्योतिषाचार्य का कहना है कि दुनिया में सबसे बड़ी चुनौती ही खुद को शांत रखना है, बाहर से भी और भीतर से भी। कभी गुरसे के क्षणों में तो कभी तनाव और उलझन के समय में भी। लेकिन जब आप शिव की ओर बढ़ते हैं, तो मन अपने आप शांत होने लगता है। तो यह समझ लें कि आप शिव की ओर बढ़ रहे हैं।

भक्त को जीवन में किसी जीवन में कोई ऐसी समस्या आ जाती है जिसका कोई समाधान नहीं होता है, लेकिन अचानक से आपकी कोई

व्यक्ति या फिर परिस्थिति मदद कर देती है। ऐसी स्थिति बनती है, तो समझ लें कि आपके ऊपर शिव की विशेष कृपा है।

सकारात्मक ऊर्जा का अधिक अनुभव होना

उनका कहना है कि व्यक्ति को अंदर से एक अद्भुत सकारात्मक ऊर्जा महसूस होती है। आपके अंदर से किसी दूसरे का अहित या फिर नकारात्मकता हाट जाती है और आपका मन हिलकलप शंत रहता है, तो जान लें कि शिव की आप पर विशेष कृपा है। उनका कहना है कि अगर किसी व्यक्ति के ऊपर भोले बाबा की असीम कृपा होती है, तो उसका अध्यात्म की ओर अधिक झुकना होने लगता है। रुझाव पहचान, शिव मंत्रों का जाप करने से लेकर उनके मजान सुनना परबंद करने लगता है तो समझ लें कि आपके ऊपर शिव की विशेष कृपा है।

खबर संक्षेप

रीजनल सेंटर में दाखिले की प्रक्रिया 10 तक बढ़ाई कोसली। कृष्ण नगर स्थित भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय के महिला रीजनल सेंटर में यूजी और पीजी कोर्सों की आनलाइन रजिस्ट्रेशन और दाखिले की प्रक्रिया 19 से बढ़ाकर 30 जुलाई तक कर दी गई है। विश्वविद्यालय प्रशासन ने सभी इच्छुक छात्राओं से अनुरोध किया है कि वे निर्धारित तिथि तक आनलाइन आवेदन और आनलाइन फीस भरना शुरू करें। निदेशक डा. यशपाल शर्मा ने के अनुसार रीजनल सेंटर के यूजी और पीजी कोर्सों में दाखिले के लिए छात्राओं को सबसे पहले सभी जरूरी दस्तावेज के साथ आनलाइन रजिस्ट्रेशन करना जरूरी है।

कांवड़ियों की सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम: एसपी

रेवाड़ी। श्रावण मास के पावन अवसर पर प्रतिवर्ष हजारों श्रद्धालु पवित्र कांवड़ यात्रा पर प्रस्थान करते हैं। इस धार्मिक यात्रा को शांतिपूर्ण, सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित रूप से संपन्न कराने हेतु पुलिस अधीक्षक हेमन्त कुमार मीणा ने सभी थाना प्रभारियों एवं संबंधित अधिकारियों को व्यापक दिशा-निर्देश जारी किए हुए हैं। इस संबंध में जिला पुलिस सख्ती से निगरानी व कार्रवाई कर रही है। पुलिस श्रद्धालुओं, आयोजकों और आमजन से सौहार्दपूर्ण अपील करते हुए यह स्पष्ट करना चाहती है कि यात्रा के दौरान किसी भी प्रकार की लापरवाही, अव्यवस्था या कानून का उल्लंघन किसी भी स्थिति में सहन नहीं किया जाएगा।

विद्यार्थियों ने निकाली जागरूकता रैली

रेवाड़ी। सनलोक इंटरनेशनल स्कूल में शनिवार को वन महोत्सव के उपलक्ष्य में पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता व रैली का आयोजन किया गया। यह आयोजन कक्षा चौथी से कक्षा बारहवीं तक के बच्चों के लिए किया गया। इस आयोजन में विद्यालय के विभिन्न सदस्यों के छात्रों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। डा. वीपी यादव ने बताया कि आयोजन का मुख्य उद्देश्य छात्रों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना और उन्हें पेड़-पौधों के महत्व से अवगत कराना था। छात्रों ने अपनी रचनात्मकता और कलात्मकता का प्रदर्शन किया।

कार्यक्रम की शुरुआत रेणु गुप्ता, संगीता गुप्ता वह मुख्य अतिथियों महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन कर की हरिभूमि न्यूज रेवाड़ी

अग्रवाल भवन में अग्रवाल समाज की महिला विंग ने प्रेम, भक्ति और हरियाली का त्योहार हरियाली तीज महोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास से मनाया। अग्रवाल महिला विंग द्वारा यह पावन त्योहार 18 जुलाई को शाम तीन बजे अग्रवाल भवन में मुख्य अतिथि के रूप में ज्योति अरुण गुप्ता, अनीता सिंगला, डॉ अनुभूति, सीमामुकेश भट्टे वाले बिपला अग्रवाल व कंचन गोयल ने शिरकत की। कार्यक्रम की शुरुआत रेणु गुप्ता, संगीता गुप्ता वह मुख्य अतिथियों महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा के समक्ष दीप

रेवाड़ी के पांच मुख्य पदों के लिए मतदान शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न

सैनी सभा के चुनावों में मनोज ने मारी बाजी, नविंद्र को नौ मतों से दी शिकस्त

प्रधान पद के लिए दो, उपप्रधान के लिए 3, सचिव और सहसचिव के लिए 2-2 जबकि कोषाध्यक्ष पद के लिए भी 2 उम्मीदवार मैदान में थे

हरिभूमि न्यूज रेवाड़ी

सैनी सभा, रेवाड़ी के पांच मुख्य पदों के लिए शनिवार मतदान शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हो गया। पूर्व प्रधान चेताराम सैनी समर्थक मनोज सैनी ने 9 वोट से नविंद्र को हराकर प्रधान पद पर कब्जा जमा लिया। दोनों के बीच रोचक मुकाबला देखने को मिला। सहायक चुनाव



रेवाड़ी। वोटिंग के लिए बस से उतरते हुए मतदाता।

फोटो: हरिभूमि

अधिकारी चंदन ने बताया कि प्रधान पद के लिए 2 उम्मीदवार, उपप्रधान के लिए 3, सचिव और सहसचिव के लिए 2-2, जबकि कोषाध्यक्ष पद के लिए भी 2 उम्मीदवार मैदान में थे। कार्यकारिणी सदस्य पद के लिए

कुल 7 लोगों ने नामांकन दाखिल किया है। चुनाव को लेकर तैयारियां पूरी कर ली गई हैं और पूरे समुदाय में मतदान को लेकर उत्साह का माहौल है। उपप्रधान पद के लिए रामसिंह ने गिरधारी को 14 वोट से हराया। सचिव के लिए धर्मेंद्र

हरिसिंह सैनी नहीं लड़ेंगे चुनाव

उपप्रधान पद के लिए आए 3 आवेदकों में हरिसिंह सैनी ने चुनाव नहीं लड़ने का ऐलान किया है। हरिसिंह सैनी ने कहा कि वे नाम वापसी के लिए सैनी सभा गए थे लेकिन तय समय से कुछ देर लगे पहुंचे तो चुनाव अधिकारी ने उनका नाम वापस नहीं लिया। वे चुनाव नहीं लड़ रहे हैं। प्रधान पद के चुनाव को लेकर उन्होंने कहा कि वे सहयोगियों से चर्चा करेंगे, उसके बाद ही समर्थन का फैसला करेंगे।

सैनी सभा के करीब सात हजार सदस्य

सैनी सभा के करीब 7 हजार सदस्य हैं। कुल 45 कॉलेजियम के 40 वार्ड में एक-एक प्रत्याशी होने के कारण केवल 5 वार्डों में ही मतदान हुआ। 5 वार्ड का चुनाव संपन्न होने के बाद अब कॉलेजियम सदस्य व दूसरे पदों के लिए चुनाव होगा। चुनाव में सभी पदों पर आमने-सामने का ही मुकाबला होगा। चुनाव के दौरान माहौल पूरी तरह शांतिपूर्ण बना रहा।

सैनी ने मनमोहन सैनी को 23 वोट से हराया। सहसचिव के लिए सुंदरलाल ने प्रताप सैनी को 13 वोट से हराया। कोषाध्यक्ष के लिए लक्ष्मीनारायण ने सर्वेश को 13 वोट से हराया। चुनाव शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न होने पर पूर्व प्रधान चेताराम सैनी और शशि सैनी ने सभा के सदस्यों का आभार जताया।

अस्पताल की मांग को धरना जारी

हरिभूमि न्यूज रेवाड़ी

रामगढ़ भगवानपुर में सरकारी अस्पताल के निर्माण को लेकर धरना शनिवार को भी जारी रहा। धरने के दौरान निर्णय लिया गया आसपास के गांवों के लोगों की बैठक 21 जुलाई को बुलाई जाएगी, जिसमें आगामी रणनीति को लेकर निर्णय लिया जाएगा। केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह खुद व बेटे पर हुई टिप्पणी के बाद इस गांव में अस्पताल निर्माण की संभावनाओं से पहले ही पल्लवी झाड़ चुके हैं। शनिवार को धरने में रामगढ़, भगवानपुर के अलावा बुड़ाना, बुड़ानी, फिदेड़ी, तुर्कियावास,



रेवाड़ी। शनिवार को धरने पर बैठे ग्रामीण।

फोटो: हरिभूमि

बालियर खुर्द, फदनी, मीरपुर, गोकुलपुर व कुम्भावास आदि दर्जनभर गांवों से ग्रामीण शामिल हुए। धरना-प्रदर्शन की अध्यक्षता राव लाल सिंह ने की। धरना को सोशल एक्टिविस्ट का. रमेश चंद्र एडवोकेट, अभयसिंह फिदेड़ी, मास्टर प्रेम प्रकाश बुड़ाना, शेर सिंह

मीरपुर, हनुमत उर्फ पिलानी व महोपाल सिंह फदनी आदि ने संबोधित किया। उन्होंने कहा कि राव इंद्रजीत सिंह गांव की ओर से दी गई 10 एकड़ जमीन पर मौन क्यों हैं। उनके वायदे के अनुसार 10 एकड़ जमीन जलघर के लिए दी गई थी।



रेवाड़ी। चर्यानिट विद्यार्थी स्कूल स्टाफ के साथ।

फोटो: हरिभूमि

बीकानेर स्कूल में हेड बॉय, हेड गर्ल व हाउस कैप्टन का चयन

रेवाड़ी। राजकीय मॉडल संस्कृति स्कूल बीकानेर में शनिवार को चयन प्रक्रिया हुई। प्राचार्य मनोज कुमार की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में अर्थात् प्रवक्ता पवन ने मुख्य चुनाव अधिकारी की भूमिका निभाई। प्रवक्ता सती सिंह, अध्यापक रविंद्र कुमार, मुकुंश कुमार ने चुनाव प्रक्रिया का संचालन किया। अध्यापक मुकुंश कुमार ने बताया कि अध्यापिका मंजूता तथा पूनम देवी की देखरेख में स्कूल हेड बॉय तथा स्कूल हेड गर्ल के लिए विद्यालय के 293 विद्यार्थियों ने मतदान किया। जिसमें 123 अंकों के साथ भारत भूषण ने हेड बॉय का चुनाव जीता तथा 156 अंकों के साथ छात्रा

योगिता ने हेड गर्ल का चुनाव जीता। अल्प हाउस कैप्टन पद के लिए प्रवक्ता नीतू कुमारी तथा हरिता शर्मा की देखरेख कक्षा 10वीं के छात्र सुमित को हाउस कैप्टन चुना गया। बीटा हाउस कैप्टन पद के लिए प्रवक्ता सुविधा यादव तथा अजिता रोहिल्ला की देखरेख में कक्षा 11 वीं की छात्रा साक्षी को हाउस कैप्टन चुना गया। गामा हाउस कैप्टन पद के लिए प्रवक्ता मनीषा रानी तथा प्रिया देवी की देखरेख में कक्षा 10वीं की छात्रा कीर्ति को हाउस कैप्टन चुना गया। डेल्टा हाउस कैप्टन पद के लिए प्रवक्ता रेखा रोहिल्ला तथा पुनीता सैनी की देखरेख में कक्षा 10वीं की छात्रा सुकृष्णा को हाउस कैप्टन चुना गया।



रेवाड़ी। स्कूल में पौधे लगाते हुए बच्चे। फोटो: हरिभूमि

एक पौधा मां के नाम अभियान के तहत लगाए पौधे

रेवाड़ी। पर्यावरण संरक्षण महत्त्व के मद्देनजर एक पौधा मां के नाम अभियान के तहत शनिवार को दिल्ली रोड स्थित सतीश पब्लिक कॉलेजियम सेकेंडरी स्कूल में पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के तहत विद्यार्थियों ने विद्यालय परिसर में एक सी से अधिक छायादार व फलदायक पौधे लगाए। विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए प्राचार्य संगीता यादव ने कहा कि आज तेजी से रहे औद्योगिकरण व अंधाधुंध पेड़ों के कटव के चलते प्रकृषण भी उसी गति से बढ़ रहा है। इसी का परिणाम है कि हमारे शरीर में अनेक तरह की बीमारियां पनप रही हैं। हवा भी प्रदूषित हो गई है जिसके चलते खुली हवा में बच्चों का खेलना भी दूबर हो गया है। हमारे आसपास का माहौल प्रदूषण युक्त हो गया है। इसी बात को मद्देनजर नजर आज देशभर में एक पौधा मां के नाम अभियान चलाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जिस तरह से मां हमें जीवन देती हैं वैसे ही पौधे भी हमें जीवन देते हैं। उन्होंने कहा कि चारों ओर हरियाली देखकर मन प्रफुल्लित हो जाता है।

खबर संक्षेप

चित्रकला के माध्यम से दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

कोसली। कारोली गांव के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में रेवाड़ी की मेरा युवा भारत संस्था एवं गांव की शहीद चंद्रशेखर आजाद यूथ क्लब के सहयोग से शनिवार को एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर छात्रों और शिक्षकों ने पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम स्थान तमन्ना कुमारी, द्वितीय स्थान अंशु तथा तृतीय स्थान सुशी ने प्राप्त किया। इस अवसर पर मेरा युवा भारत के राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक अनुराग यादव एवं शहीद चंद्रशेखर आजाद यूथ क्लब के सचिव विकास, तथा सदस्य सतपाल, राहुल, हरीश एवं मनीष कुमार, विद्यालय के प्रधानाचार्य डा ईश कुमार, शिक्षकगण सतीश कुमार, मनोज कुमार, उर्मिला देवी, राजकुमार, उषा रानी, गीता देवी सहित स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।



स्वास्थ्य मंत्री आज करेंगी लोगों से सीधा संवाद

रेवाड़ी। हरियाणा सरकार में स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव रविवार, 20 जुलाई को रेवाड़ी शहरी क्षेत्र में लोगों से सीधा संवाद करेंगी। वह लोगों की समस्याएं सुनकर उनका समाधान करने का कांठ करेंगी। आरती राव के निजी सचिव विकास यादव ने बताया कि रविवार दोपहर बाद स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव 4 बजे से विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल होंगी। वे नई बस्ती क्षेत्र, भाजपा कार्यालय, गौरी बोलानी रोड व अनाज मंडी क्षेत्र में आमजन से मिलेंगी। उन्होंने बताया कि स्वास्थ्य मंत्री इलाके के लोगों की समस्याओं को गंभीरता से लेते हुए उनका समाधान कराने में लगी हुई हैं। वह लगातार लोगों के बीच जाकर उनकी समस्याएं सुन रही हैं।



आरती राव।

पासवर्ड बदलकर बचें साइबर ठगी से : मीणा

रेवाड़ी। पुलिस अधीक्षक हेमन्त कुमार मीणा ने कहा कि आज के दौर में हर काम इंटरनेट पर निर्भर हो गया है। तमाम तरह के वित्तीय लेन देन मोबाइल के माध्यम से हो रहे हैं। जैसे-जैसे वित्तीय लेन देन को लेकर मोबाइल व इंटरनेट पर निर्भरता बढ़ी है, वैसे-वैसे साइबर ठगी की घटनाओं में भी इजाफा हो रहा है। कमजोर पासवर्ड होने की वजह से भी कई बार साइबर अपराध का शिकार हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि साइबर अटैक से बचने हेतु मजबूत पासवर्ड का अहम योगदान हो सकता है। साथ ही इंटरनेट यूजर को समय-समय पर पासवर्ड चेंज करना चाहिए, ताकि वह साइबर ठगी से बच सकें। मीणा ने बताया कि साइबर अपराध से बचने हेतु जिला पुलिस द्वारा आमजन को सेमिनार व गोष्ठियों के माध्यम से कार्यक्रम आयोजित कर आमजन को साइबर क्राइम बारे जागरूक किया जा रहा है। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि किसी भी व्यक्ति के साथ साइबर अपराध घटित हो जाता है तो उसे किस प्रकार से बचा जा सकता है के बारे में विस्तार पूर्वक बताया जा रहा है। उन्होंने बताया कि इंटरनेट का उपयोग करते समय साइबर सुरक्षा के बारे में जानकारी व होने के कारण लोग अक्सर साइबर क्राइम का शिकार हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि साइबर अपराधी ठगी करने की विधाय से अलग-अलग तरह के तरीके अपनाते रहते हैं। उन्होंने बताया कि साइबर अपराधी द्वारा किसी व्यक्ति को झंझाव देते हुए पैसे प्राप्त करने के लिए अलग-अलग तरह के प्रलोभन देते हैं। ऐसे में हम जागरूक रहकर ही इस प्रकार की ठगी से बच सकते हैं। मजबूत पासवर्ड से टल सकता है खतरा अपने नेट बैंकिंग, ईमेल, फेसबुक, इंस्टाग्राम इत्यादि अकाउंट पर मजबूत पासवर्ड लगाए।

शिविर में बुजुर्गों को वितरित किए गए आयुज्जान कार्ड

बासकुथा। केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी आयुज्जान भारत योजना के तहत शनिवार को बासकुथा में पीएचसी में एक शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 70 साल से अधिक आयु वाले वृद्धजनों को कार्ड वितरित किए गए। इस मौके पर नए कार्ड भी बनाए गए। कार्यक्रम का शुभारंभ खोरी मंडल भाजपा प्रमोरी पूर्व चेयरमैन चौ. बिरेन्द्र सिंह डिल्लर ने प्रतीक काटकर किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता खोल मंडल भाजपा सुभाष यादव दाणी शोभा थे और विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व जिला पार्षद कुमारी गीता, खोरी मंडल भाजपा अध्यक्ष सरपंच नरेश यादव नरु, जिला भाजपा सचिव दिनेश यादव टोट, महामंत्री प्रदीप ठेकेकर नारायणपुर व मास्टर नेमोचंद थे। पीएचसी प्रमोरी डा. प्रवीण, आयुर्वेद अधिकारी डा. सजना व डा. करुणा ने आए हुए सभी आंगठुकों का स्वागत किया। बिरेन्द्र डिल्लर ने लामार्थियों को आयुज्जान भारत स्वास्थ्य कार्ड वितरित किए।



कार्यक्रम में विविध स्टॉलों का आयोजन किया, महिलाओं ने की जमकर खरीदारी

अग्रवाल समाज की महिलाओं ने मनाया तीजमहोत्सव शंकर पार्वती विवाह की दी शानदार प्रस्तुति से मोहा मन



शिव-पार्वती के विवाह में सम्मिलित अग्रवाल समाज की महिलाएं।

फोटो: हरिभूमि

प्रज्वलन कर की गई। अग्रवाल भवन में विंग की प्रधान मोना गोयल ने बताया कि हरितालिका तीज का

त्योहार भगवान शिव वह माता पार्वती को समर्पित है। कार्यक्रम में अग्रवाल समाज की महिलाओं द्वारा

राजस्थानी नृत्य कर शिव पार्वती नाट्य प्रस्तुति के द्वारा समां बांधा गया। इसके अलावा एंकर प्रियंका ने

कार्यक्रम का संचालन करते हुए खेल व अन्य गतिविधियों से सबका मनोरंजन किया। कार्यक्रम में विविध स्टॉलों का आयोजन किया गया खां पर महिलाओं ने जम कर खरीदारी की। सभी महिलाओं ने तीज के गाणों का आनंद लिया और जी भरकर नृत्य किया। अग्रवाल महिला विंग की तरफ से सभी महिलाओं के लिए स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था की गई। विंग के सदस्यों ने डॉक्टर सीमा मित्तल, डॉक्टर प्रज्ञा, डॉ. गुंजन गोयल, डॉ. अंचल, डॉक्टर डॉक्टर प्रभा अग्रवाल व डॉक्टर दिव्या का दुपट्टे व माला से स्वागत किया। विंग की प्रधान मोना गोयल ने अपनी पूरी

टीम उपप्रधान कल्पना अग्रवाल, मैनेजर प्रभा अग्रवाल, सचिव अल्का गुप्ता, सह सचिव शोफाली गोयल और मंजू अग्रवाल, कोषाध्यक्ष शशि मित्तल व आंचल गर्ग व अन्य सदस्य ललितला मित्तल, उषा रानी, रेखा अग्रवाल, रजनी अग्रवाल, सुनीता अग्रवाल, दीपिका अग्रवाल, आभा रूंगटा, नीतू अग्रवाल, अमन अग्रवाल, सीमा अग्रवाल, अंजना, आशा, यशोदा बंसल, पूनम, यशिका मित्तल, राज रानी, पल्लवी अग्रवाल का आभार प्रकट किया और समाज के महिलाओं में मेलजोल बढ़ाने की दिशा में इस कार्यक्रम को एक मजबूत आधार बताया।

सरदार पटेल पुरस्कार के लिए आवेदन 31 तक

हरिभूमि न्यूज रेवाड़ी

भारत सरकार ने देश की एकता और अखंडता के क्षेत्र में अनुकरणीय योगदान देने वाले नागरिकों, संस्थाओं और संगठनों को सम्मानित करने के लिए सरदार पटेल राष्ट्रीय एकता पुरस्कार 2025 के लिए नामांकन प्रक्रिया अगस्त 5 तक की है। यह पुरस्कार भारत के प्रथम गृह मंत्री लोह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की स्मृति में स्थापित किया गया है, जिन्होंने स्वतंत्र भारत के निर्माण में राज्य के एकीकरण की दिशा में ऐतिहासिक भूमिका निभाई थी। डीसी अभिषेक मीणा ने बताया कि यह पुरस्कार उन व्यक्तियों और संस्थाओं को प्रदान किया जाएगा, जिन्होंने राष्ट्रीय एकता, अखंडता और सामूहिकता को मजबूत करने के लिए उल्लेखनीय कार्य किए हैं।



रेवाड़ी। डीसी अभिषेक मीणा या पेशे के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाएगा। अवेदन गृह मंत्रालय की वेबसाइट पर उपलब्ध निर्धारित प्रारूप में ऑनलाइन किए जा सकते हैं। समिति करेगी चयनित नामों की सिफारिश डीसी ने बताया कि सरकार की ओर से यह भी स्पष्ट किया गया है कि चयनित नामों की सिफारिश, जिसके उच्चस्तरीय समिति करेगी, एकैकरीक बाद राष्ट्रपति द्वारा विजेता को एक विशेष सम्मान में प्रशस्ति पत्र और प्रतीक चिन्ह प्रदान किया जाएगा।

रेलवे अंडरपास निर्माण के चलते मुख्य रास्ता हुआ बंद खोरी गांव एक माह से मुख्य मार्ग से कटा, ग्रामीणों को हो रही परेशानी

खास बातें
हाइवे पर पहुंचने के लिए लगाना पड़ रहा लंबा चक्कर
समस्या का नहीं हुआ समाधान



रेवाड़ी। निर्माणकार्य के चलते बंद किया गया अंडरपास। फोटो : हरिभूमि

बीमार को अस्पताल पहुंचाना मुश्किल

ग्रामीणों ने बताया कि इस समय उन्हें जिला मुख्यालय पहुंचने के लिए चिनावास, मोतवास व सहारनवास के रास्ते निकलना पड़ता है। इससे उन्हें लगभग 10 किलोमीटर की अतिरिक्त दूरी तय करनी पड़ती है। आलियावास व प्राणपुरा के ग्रामीणों को भी नेशनल हाइवे पहुंचने के लिए लंबा चक्कर लगाना पड़ रहा है। ऐसे में इन गांवों में अगर कोई गंभीर रूप से बीमार हो जाए, तो उसे समय पर अस्पताल पहुंचाना मुश्किल बन सकता है।

परिवहन सेवा पर भी लग चुके ब्रेक

खोरी व आसपास के गांवों के लोगों के लिए रोडवेज विभाग की ओर से बस सेवा शुरू की हुई थी। इससे बड़ी संख्या में लोगों को परिवहन सुविधा मिल रही थी। अंडरपास का कार्य शुरू होने के कारण रोडवेज में रूट बदलने की बजाय बस सेवा ही बंद कर दी। बस बंद होने से ग्रामीणों को निजी वाहनों के सहारे आवागमन करना पड़ रहा है। अंडरपास निर्माण का कार्य पूरा होने से पहले बस सेवा शुरू होने की कोई संभावना नहीं है।

जा रही है। यह कार्य लगभग एक माह पूर्व शुरू किया गया था। ग्रामीणों का कहना है कि अंडरपास का कार्य शुरू करने से पहले अगर रेल विभाग पुराने रेलवे फाटक को खोल देता, तो इससे लोगों को परेशानी नहीं होती। अंडरपास बनने से पहले रेलवे फाटक से ही ग्रामीणों का

विद्यार्थियों के लिए बंद गई परेशानी

खोरी गांव में पीएमश्री सीनियर सैकेंडरी स्कूल है। इस स्कूल में गांव के साथ-साथ टॉट, गुमीना, हरजीपुर, कुंडल व बवाना आदि गांवों बच्चे पढ़ने के लिए आते हैं। स्कूल का स्टाफ भी बाहर से आता है। मुख्य मार्ग बंद होने के कारण विद्यार्थियों को तो परेशानी हो ही रही है, साथ ही स्कूल स्टाफ के लिए भी आवागमन लंबा हो गया है। विद्यार्थियों को भी वैकल्पिक मार्गों से स्कूल तक पहुंचाना पड़ रहा है।

आवागमन होता था। अंडरपास बनने के बाद रेलवे फाटक को गार्डर लगाकर बंद कर दिया गया था। इसे अगर अभी भी खोल दिया जाए, तो लोगों की परेशानी काफी हद तक कम हो सकती है। ग्रामीण रेल विभाग से समस्या के समाधान की मांग कई बार उठा चुके हैं, परंतु अभी तक इस दिशा में कोई कदम नहीं उठाए गए हैं। ग्रामीणों को आवागमन में भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

रेल अधिकारियों से लगा चुके गुहार

ग्रामीणों के लिए मुख्य मार्ग तक पहुंचाना मुश्किल बना हुआ है। इसके लिए कई किलोमीटर लंबा चक्कर लगाना पड़ रहा है। रेल विभाग के अधिकारियों से समस्या के समाधान की मांग की जा चुकी है। अधिकारी अंडरपास का निर्माण जल्द पूरा कराने का आश्वासन दे रहे हैं।
-रेखा देवी, सरपंच, खोरी।



नाबालिग छात्रा से टीकर ने की अश्लील हरकत

रेवाड़ी। जिले के एक गांव में नाबालिग छात्रा के साथ अश्लील हरकत करने के आरोप में पुलिस ने स्कूल टीकर के खिलाफ केस दर्ज किया है। पुलिस ने आरोपी टीकर की तलाश शुरू कर दी है। मामला एक गांव के मीडिल स्कूल का है। स्कूल की 8वीं कक्षा की छात्रा ने अपने परिजनों को बताया कि स्कूल का एक टीकर उसके साथ अश्लील हरकत करता है। विरोध करने पर उसे धमकाया जाता है। उसने गत दिवस भी उसके साथ छेड़छाड़ की। इसके बाद परिजनों ने पुलिस थाने जाकर शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने शिकायत मिलने के बाद आरोपी टीकर के खिलाफ केस दर्ज कर लिया। छात्रा का सामान्य अस्पताल से मेडिकल भी कराया गया है। आरोपी टीकर फरार बताया जा रहा है, जिसकी पुलिस ने तलाश शुरू कर दी है।

सरवन इंटरनेशनल स्कूल में ओरिएंटेशन प्रोग्राम आयोजित

हरिभूमि न्यूज >>> बावल

नंगली परसापुर रोड स्थित सरवन इंटरनेशनल स्कूल में नवप्रवेशी छात्रों के अभिभावकों के लिए शनिवार को अभिभावक अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विद्यालय प्रधानाचार्य अतुल कुमार ने स्वागत भाषण में विद्यालय के संकेत्यों को दोहराते हुए कहा कि हम सभी बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए एनईपी 2020 के अंतर्गत शिक्षा के विभिन्न उपकरणों का प्रयोग करते हैं तथा अभिभावकों को



रेवाड़ी। कार्यक्रम में मौजूद अभिभावक व स्टाफ सदस्य। फोटो : हरिभूमि

पर मुख्यातिथि समाजसेवी प्रदीप और देवेंद्र रहे। मुख्य अतिथि ने अपने भाषण में अभिभावकों को संस्कार सहित अनुशासनयुक्त जीवन जीने के लिए प्रेरित किया।

प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार के लिए 31 जुलाई तक ऑनलाइन आवेदन

हरिभूमि न्यूज >>> रेवाड़ी

केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की ओर से प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार के लिए आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। राष्ट्रीय बाल पुरस्कार के लिए 31 जुलाई, 2025 तक राष्ट्रीय पुरस्कार पोर्टल पर आवेदन किए जा सकते हैं।

को ही प्रदान किए जाते हैं। अगले साल जनवरी में आयोजित होने वाले समारोह में राष्ट्रपति द्वारा चयनित बालकों को पुरस्कृत किया जाएगा। अवार्ड की घोषणा 26 दिसंबर को राष्ट्रीय वीर बाल दिवस के अवसर पर की जाएगी। उन्होंने बताया कि बाल पुरस्कार में विभिन्न श्रेणियों के तहत कुल 25 बच्चों का चयन किया जाएगा। पुरस्कारों में पदक व प्रशस्ति पत्र प्रदान किए जाएंगे। उन्होंने चयन प्रक्रिया की जानकारी देते हुए बताया कि सर्वप्रथम स्क्रीनिंग कमेटी द्वारा प्राप्त आवेदनों की छंटनी की जाएगी उसके बाद विभिन्न नामों का चयन राष्ट्रीय समिति द्वारा किया जाएगा।



रेवाड़ी। मंदिर प्रांगण में पौधे लगाते हुए आचार्य योगेंद्र व अन्य। फोटो : हरिभूमि

पर्यावरण मित्रों ने लगाए फलदार पौधे मंदिर प्रांगण में हुआ कार्यक्रम

रेवाड़ी। सामाजिक संगठन भूमिपुत्र विद्योय टीम व अन्य पर्यावरण मित्रों ने आचार्य योगेंद्र के साथ मिलकर करनवास के शनिदेव मंदिर व पास में बने जोड़ड़ के समीप पौधरोपण किया गया। इस मौके पर आम, चिकू, बड़, पीपल, अर्जुन, आवला, बेल पत्र, जामुन व अमरुद के पौधे लगाए और उनका संरक्षण करने की जिम्मेदारी भी ली। इस मौके पर करनवास गांव के रामप्रसाद, मास्टर रामनिवास, प्रदीप खटाना आसलवास, नवीन नंबरदार गढ़ी बौलानी, हितेश यादव गोकलगाढ़, मनीष शर्मा कमालपुर, रविचंद्र यादव, सोनू यादव, राहुल व शिशुपाल यदुवंशी पर्यावरण मित्र समीने ने अगली पीढ़ी के लिए उपहार के रूप में न्यू पौधरोपण किया।

प्रतियोगिता हरियाणा योगासन स्पोर्ट्स एसोशिएशन का आयोजन

योगासन प्रतियोगिता में आरकेसी स्कूल के विद्यार्थियों ने मारी बाजी

हरिभूमि न्यूज >>> रेवाड़ी

हरियाणा योगासन स्पोर्ट्स एसोशिएशन की ओर से खोल ब्लाक की खण्ड स्तरीय योगासन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें राव खेम चंद विद्या विहार, बोहतवास अहीर के छात्र-छात्राओं ने बड़-चढ़कर भाग लिया। इस प्रतियोगिता में विद्यालय की छात्राओं ने 10-14 व 14-18 श्रेणी में क्रमशः प्रथम स्थान श्रेया एवं भावी, द्वितीय स्थान पोशिका एवं कशिश,



रेवाड़ी। स्कूल के विजेता प्रतिभागी स्टाफ सदस्यों के साथ। फोटो : हरिभूमि

तृतीय स्थान नीतीका एवं रिया ने ने प्रथम स्थान रश्मि द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा 10-14 वर्ग में छात्रों हर्ष एवं तृतीय स्थान जतिन ने प्राप्त

कर अपने विद्यालय, क्षेत्र एवं माता पिता का नाम रोशन किया। विद्यालय के अध्यक्ष देवेन्द्र कुमार, प्राचार्य प्रदीप कुमार यादव, उप प्राचार्या संगीता यादव, काउंसलर डा. ओपी यादव, एवं योगासन स्पोर्ट्स अध्यापिका सुमित्रा एवं रीतु यादव ने योग के प्रति छात्र-छात्राओं को और अधिक जागरूक होने के बारे में प्रेरित किया तथा सफलता प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को बधाई दी व उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

नवजात शिशु एवं बाल रोग विशेषज्ञ

उगन्ता देवी बच्चों का अस्पताल




20% off
CT SCAN & Lab Test
TILL 31 JULY 2024

24 SERVICE EVERY DAY

CT SCAN की सुविधा उपलब्ध

सुविधाओं

- नवजात शिशु की सभी सुविधाएं एवं NICU, PICU
- वैटिलेटर, CPAP, BIPAP, Oxygen नवजात पीलिया
- बच्चों को दौरा आना, दिमाग में कीड़ा, अपाहिज मंदबुद्धि, दिमाग में पानी (हाईड्रोकेफलस)
- डेंगू, मलेरिया, टायफाइड एवं पीलिया का इन्फेक्शन लीव रोग, वजन न बढ़ना, बार-बार दस्त लगाना पेट दर्द, गेहूं एलर्जी
- छाती रोग, दमा, निमोनिया, टी.बी., चमड़ी रोग एलर्जी

डॉ. सुधा यादव
PEDIATRICIAN AND CRITICAL CARE SPECIALIST & NEONATOLOGIST
MD, DNB, PFCC MIMA, MIAP
EX. MS, RCPCH-UK (AIIMS, PGI)

हर रविवार OPD फीस फ्री

सभी मेजर TPA के तहत कैशलेश इलाज की सुविधा

नईवाली चौक रेवाड़ी
8059105066, 8570982373

दमा एलर्जी जोड़ों का दर्द

डॉ. रघुबीर सिंह
Acu.M.D.
9416901254
फोन पर संपर्क करने का समय प्रातः 8 बजे से सायं 6 बजे तक

शुगर पुराना नजला का इलाज बिना दवा चीनी मशीन द्वारा

रेवाड़ी: हर सोमवार को मिलें

प्राइम न्यूरो स्पाइन एवं सुपर स्पेशलिटी अस्पताल

पब्लिक हेल्थ आफिस के सामने, गढ़ी बोलनी रोड, रेवाड़ी
समय: प्रातः 8 बजे से दोपहर 2 बजे तक, सायं 5 बजे से 7 बजे तक

दमा, एलर्जी, जोड़ों का दर्द, शुगर, नजला का इलाज चीनी मशीन द्वारा जड़ से खत्म किया जाता है।

आज भारत में करोड़ों लोग अस्थमा रोग के शिकार हैं। अस्थमा का उचित उपचार न करने के कारण पर हर वर्ष हजारों लोगों की मृत्यु भी हो जाती है। अस्थमा रोग किसी भी आयु के व्यक्ति को हो सकता है। अस्थमा / दमा यह एक एलर्जी रोग है जिसका समय पर उपचार न करने से रोगी व्यक्ति की हालत गंभीर हो सकती है। अस्थमा का रोकथाम करने के लिए रोगी व्यक्ति को दिए जाने वाले उपचार की जानकारी और महत्व पता होना जरूरी है।

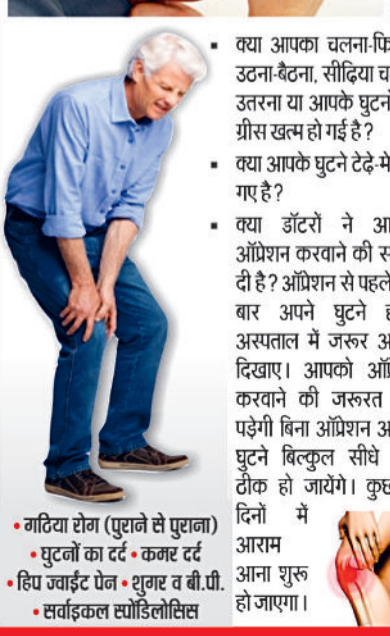


न्यूरो से संबंधित सभी बीमारियों का एक्यूपंचर द्वारा उपचार
साइटिका सर्वाइकल, फ्रोजन शोल्डर, माइग्रेन, कंधे का दर्द, कमर के हिस्से से पर तक होने वाला दर्द, स्लिप डिस्क, कमर दर्द, हाथों की उंगलियों का काम काम करना, हाथ में लगातार रहने वाला दर्द एवं अन्य लाईलाज न्यूरो की विभिन्न बीमारियों का सफल उपचार।

- कौन से ऐसे कारण हैं जिनसे एलर्जी होती है।**
एलर्जी हमारे दैनिक जीवन में भ्रमण करते हुए हमारे आसपास के माहौल/वातावरण से कई कारणों से हो सकती है जैसे पेड़, पौधे, धूल, मिट्टी, पालतु जानवर, दवाएं एवं खाने-पीने की वस्तुएं इत्यादि।
1. एक परिवार के विभिन्न सदस्यों, महिला, पुरुष, बच्चे या युद्ध की विभिन्न वस्तुओं से एलर्जी हो सकते हैं।
2. कुछ तो फूलों को छूने से एलर्जी हो सकती है।
3. दूध, दही, मांस, मछली का सेवन करने से भी एलर्जी हो सकती है।
4. पौलीथीन एवं नायलॉन के साथ भी एलर्जी हो सकती है।
5. सौंदर्य प्रसाधनों के प्रयोग से भी एलर्जी हो सकती है।
- गठिया: डाक्टर ने बताया कि गठिया शरीर के किसी भी एक जोड़ से दर्द शुरू होता है और धीरे-धीरे शरीर के सभी जोड़ प्रभावित होते हैं। सभी जोड़ों में असहनीय दर्द होता है। गठिया का रोगी दवाई से बचना चाहिए क्योंकि अंग्रेजी दवाई आपके शरीर को नुकसान पहुंचती है। नजला एक विजातीय द्रव्य है। हमारे सिर में एक आलफैक्ट्री वाल्व होती है। जिसमें यह द्रव्य जमा रहता है। इसकी सात वाल्व होते हैं। इसके लीक होने के कई कारण होते हैं जैसे सर्द-गर्म का बिगड़ना, कफ की अधिकता, सहवास के बाद हवा लगना आदि। नाक के मससे बढ़ना, नाक रुकना, छींके आना, एलर्जी इत्यादि पहली तीन वाल्व लीक होने से होता है। इसके बाद वाली चार वाल्व लीक होने से यह विजातीय द्रव्य (नजला) गले में अंदर गिरने लगता है, जिसमें सांस की नली जाम हो जाती है। एलर्जी का कोई भी कारण हो यहां इलाज लेने से रोगी उभर भर के लिए ठीक हो जाता है। डॉ. यादव के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में दमा मरीजों की संख्या ज्यादा हो रही है। लगातार धूम्रपान करने एवं वातावरण में व्याप्त धूल के कारण यह बढ़ रही है। अगर इसका सही समय पर इलाज नहीं किया जाता है तो कैंसर होने का खतरा रहता है। कभी-कभी तो आदमी की मौत भी हो जाती है। आजकल यह एक घातक बीमारी सिद्ध हो रही है। इसलिए सही समय के रहते डॉक्टर के पास जांच करवानी चाहिए। यहां इन बीमारियों का इलाज चीनी पद्धति से किया जाता है। इसमें शरीर में निश्चित बिन्दु होते हैं, इन बिन्दुओं पर विशेष मशीनों से इलाज किया जाता है। इसमें कोई भी चीरे की जरूरत नहीं पड़ती है। हजारों मरीज हमारे यहां फायदा उठा चुके हैं और उठा रहे हैं।**

- श्वसनी दमा फेफड़ों की ऐसी समस्या है, जिससे श्वसन नली में बाधा आती है।
- अलग अलग बच्चों में अस्थमा के लक्षण अलग होते हैं और ये लक्षण एक ही बच्चे में बदलते भी रहते हैं।
- अस्थमा में श्वसन नली पूरी तरह बंद हो जाती है, जिससे शरीर के महत्वपूर्ण अंगों को आक्सीजन की आपूर्ति बंद हो सकती है।
- अस्थमा सांस संबंधी रोग है जिसमें व्यक्ति को सांस लेने और छोड़ने में परेशानी होती है। दवाओं के जरिये इसे नियंत्रित तो किया जा सकता है लेकिन ठीक नहीं किया जा सकता है। हमारे इलाज से रोगी को पूर्णतः ठीक किया जाता है।

आइये जाने क्या है एलर्जी
प्रत्येक मनुष्य भले महिला हो या पुरुष में कुदरत ने बाहरी तत्वों को सहन करने की खास ताकत दी है। फिर भी कई बार ऐसे तत्व जो मनुष्य के शरीर पर दुष्प्रभाव डालने वाले एवं शरीर के भीतर पहुंचने की कोशिश करते हैं, तब शरीर के आंतरिक तत्व हलचल में आकर उन उदरत तत्वों के प्रभाव को शरीर पर पड़ने की कोशिश को रोकते हैं। इस तरह की प्रतिक्रिया एलर्जी की उत्पत्ति का कारण बनती है। एलर्जी के लक्षण: शरीर में खुजली • चमड़ी का लाल होना • लाल वाने होना • शरीर में दाने वाली जगह पर सूजन होना • एलर्जी होने से "एरिजमा" नाम की बीमारी भी हो जाती है, जिससे जोर से खारिश होना या उस जगह पर पानी का रिसाव होने लगता है। • एलर्जी के कारण कुछ लोगों को अस्थमा नाम की बीमारी हो जाती है। इस स्थिति में रोगी को सांस लेने में परेशानी आती है, फेफड़ों में सूजन होना व जलन होना • छींको का आना, नाक बंद होना, नाक की हड्डी टेढ़ी होना, जुकाम होना • गले में तेज जलन एवं दर्द होना • पेट का दर्द होना • चेहरा, हाँट, आंखों में सूजन • जी मिचलाना एवं डायरिया • खाने में तकलीफ



कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें

दमा, एलर्जी क्लीनिक के संचालक डॉ. रघुबीर सिंह यादव का कहना कि विशेष मशीनें नजला रोगियों के लिए वरदान साबित हो रही हैं। इस पद्धति में रोगी को कोई दवाई लेने की जरूरत नहीं होती। डॉ. यादव का कहना है कि इस बीमारी का प्रकोप अब बूढ़े और जवान व्यक्ति के अलावा बच्चों में भी बहुत अधिक हो रहा रोगी को चाहिए की इलाज में लापरवाही नहीं बरते और अंग्रेजी दवाई से बचना चाहिए क्योंकि अंग्रेजी दवाई आपके शरीर को नुकसान पहुंचती है। नजला एक विजातीय द्रव्य है। हमारे सिर में एक आलफैक्ट्री वाल्व होती है। जिसमें यह द्रव्य जमा रहता है। इसकी सात वाल्व होते हैं। इसके लीक होने के कई कारण होते हैं जैसे सर्द-गर्म का बिगड़ना, कफ की अधिकता, सहवास के बाद हवा लगना आदि। नाक के मससे बढ़ना, नाक रुकना, छींके आना, एलर्जी इत्यादि पहली तीन वाल्व लीक होने से होता है। इसके बाद वाली चार वाल्व लीक होने से यह विजातीय द्रव्य (नजला) गले में अंदर गिरने लगता है, जिसमें सांस की नली जाम हो जाती है। एलर्जी का कोई भी कारण हो यहां इलाज लेने से रोगी उभर भर के लिए ठीक हो जाता है। डॉ. यादव के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में दमा मरीजों की संख्या ज्यादा हो रही है। लगातार धूम्रपान करने एवं वातावरण में व्याप्त धूल के कारण यह बढ़ रही है। अगर इसका सही समय पर इलाज नहीं किया जाता है तो कैंसर होने का खतरा रहता है। कभी-कभी तो आदमी की मौत भी हो जाती है। आजकल यह एक घातक बीमारी सिद्ध हो रही है। इसलिए सही समय के रहते डॉक्टर के पास जांच करवानी चाहिए। यहां इन बीमारियों का इलाज चीनी पद्धति से किया जाता है। इसमें शरीर में निश्चित बिन्दु होते हैं, इन बिन्दुओं पर विशेष मशीनों से इलाज किया जाता है। इसमें कोई भी चीरे की जरूरत नहीं पड़ती है। हजारों मरीज हमारे यहां फायदा उठा चुके हैं और उठा रहे हैं।

विज्ञापन कभी कभी प्रकाशित होता है। विज्ञापन की कटिंग साथ लाएं।

कवर स्टोरी

शिखर चंद जैन

कभी-कभी बन जाएं बच्चे

जी भर करे लाइफ एंजॉय

जीवन में सबसे सुहाने दिन बचपन के ही होते हैं। उस दौर से जुड़ी यादें हम कभी नहीं भूल पाते हैं। लेकिन ऐसा नहीं है कि हम बड़े हो गए तो अब बच्चों जैसी हरकतें नहीं कर सकते। जब भी मौका मिले, कुछ पल के लिए ही सही फिर से बच्चा बनकर देखिए, आपका तनाव गायब हो जाएगा और लाइफ को भरपूर एंजॉय कर पाएंगे।



अपनी जिंदगी में रोजमर्रा की जिम्मेदारियों के बोझ से व्यथित होकर अक्सर हम अपने बचपन के दिनों की मस्ती, बेपरवाही और उन दिनों से जुड़ी कुछ खास बातों को याद करके उदास हो जाते हैं और अनायास ही बोल पड़ते हैं, बचपन के दिन भी क्या दिन थे, उड़ते फिरते थे तितली बन/कई बार मन में ऐसा भी खयाल आता है कि सब के सपनों को साकार करने में, दुनिया की उम्मीदों पर खरा उतरने की कोशिश में, कितना थक जाते हैं हम। हम सोचने लगते हैं कि काश, फिर से वो बेफिक्री आ जाए, जो बचपन के दिनों में हुआ करती थी। वाल्ट डिजनी ने कहा था, 'इस दुनिया की मुश्किल यह है कि बहुत सारे लोग बड़े हो गए हैं।'

नहीं भूलते वो मस्ती भरे दिन

इस दुनिया में शायद ही कोई शख्स होगा, जो अपने बचपन के दिनों में लौट जाने की ख्वाहिश ना रखता हो। जब जिम्मेदारियां कम थीं और खुशियां बेगुमर। होमवर्क को झटपट पूरा किया और घर से बाहर निकल गए कॉलोनी के पार्क में, मकान की छत पर या अपनी बालकनी में। कभी मिट्टी में लथपथ हुए, तो कभी बारिश के पानी में भीगे। बाजार से गेंद नहीं ला पाए तो रद्दी कागजों का गोला बनाकर खेलने लगे। महर्गें खिलौने ना हों तो कागज की नाव या पतंग ही सही। बस मस्ती चाहिए थी, हर कीमत पर।

करें ऐसा, जिसमें आए मजा

आप चाहें तो आज अपने बचपन वाली उम्र भले वापस ना ला सकें, लेकिन 40, 50, 60 साल के होने के बावजूद दिल बचपन का ला सकता है। इससे न सिर्फ आपको अनूठी खुशी मिलेगी बल्कि स्ट्रेस लेवल भी कम होगा। याद कीजिए बचपन में हम कितने

क्रिएटिव होते थे। हमारे पास हर चीज का विकल्प था। माचिस की बेकार डिब्बियों से टीवी जैसी आकृति बना लेते थे। अखबारों या पत्रिकाओं से कटी तस्वीरों को एक के बाद एक चिपका कर लंबा करना फिर उनके दोनों सिर पर 2 तिनकों में लपेटना। फिर डिब्बी बीच से काटकर स्क्रीन बनाकर तिनके घुमाते हुए अलग-अलग तस्वीरें



देखना। एक रुपए के लट्टू या 2 रुपए की गेंद से दिनभर खेलना, मस्ती करना। कागज की नाव बनाकर उसे बरसात के पानी में चलाना। चित्रकारी, डांस, कॉमिक्स पढ़ना, किसी गीत की पैरोडी बनकर उसे गुनगुनाना हमें कितना प्रफुल्लित करता था। अब भी क्या बिगड़ा है। अब भी आप ऐसी क्रिएटिव एक्टिविटी अपनाएं, जो आपको खुशी दे। कुकिंग, डॉसिंग, सिंगिंग, ड्राइंग कुछ भी कीजिए ताकि कुछ देर अपनी जिम्मेदारियों को भूल कर उसमें व्यस्त हो जाएं।

याद करिए गुजरे हुए दिन

किसी ने कहा है, टूटे बर्तन को खिलौना बना लेते हैं, हम बच्चे हैं हर जगह आशियाना बना लेते हैं। अगर इसी सिद्धांत पर आज भी चलें तो आप खूब खुश रहेंगे। अगर आप संयोगवश अभी उसी शहर में रहते हैं, जहां आपका जन्म हुआ और बचपन बीता तो

कभी उस गली या मोहल्ले में जाइए, जहां आपने बचपन बिताया और उन दिनों को शिद्दत से याद कीजिए। उस मकान के अड़ोस-पड़ोस में रहने वाले लोगों से मिलिए, जहां आप रहते थे। उनसे खूब गपशप कीजिए। अगर आपका शहर बदल गया है तो आप गूगल को मदद से उस मोहल्ले, पार्क या स्कूल को देख सकते हैं, जहां आपने बचपन बिताया था, या फिर फेसबुक के माध्यम से अपने बचपन के दोस्तों को ढूँढ कर उनसे बातचीत कर सकते हैं। आपके पास बचपन की तस्वीरों का एल्बम हो तो उन तस्वीरों को देखिए और एक-एक तस्वीर से जुड़ी बातें याद कीजिए। वही वाली टॉफी खरीदकर फिर से खाइए, जो आपको खूब पसंद हुआ करती थी। उस मिठाई की

दुकान पर जाकर समोसा या कचौरी खाइए, जहां के समोसे, कचौरी आप बचपन में बड़े चाव से खाते थे। आप कुछ देर के लिए ही सही अपने बचपन में पहुंच जायेंगे। यकीन मानिए, किसी की लिखी ये पंक्तियां आपको बरबस याद आ जाएंगी कि नंगे पांव दौड़ते थे उस बचपन में। बढ़ते तबुजें नै पैरों में चुपन का एहसास करा दिया।



डॉस करना या जो अच्छा लगता हो करे। यकीन मानिए आप अपनी उम्र काफी कम महसूस करने लगेंगे। इस बारे में मनोचिकित्सक डॉक्टर संजय गर्ग कहते हैं, 'हम वयस्क होकर भी बच्चों जैसी मस्ती कर सकते हैं, लेकिन इसके लिए बनावटी कंफर्ट जोन से बाहर आकर रियल कंफर्ट जोन में जाने के लिए मेंटली प्रिपेयर होना पड़ेगा।'

खूब लें राइडिंग का मजा

अपने बचपन को लौटाने के लिए, उन पलों को फिर से जीने के लिए आज के जमाने में बेस्ट प्लेस हैं एम्यूजमेंट पार्क। एम्यूजमेंट पार्क में छोटे बच्चों को खेलते देखकर आपको अपना बचपन याद आ जाएगा। फिर तरह-तरह के राइड्स का आनंद लेना, वहां घूमना-फिरना और मस्ती करना आपके अंतर्मन को पूरी तरह खुश कर देगा। जब मौका मिले, आप ऐसी जगहों पर जरूर जाएं और राइड्स के साथ-साथ वहां मिलने वाले डिफरेंट फूड्स एंजॉय करना ना भूलें।

बचकाली हरकतों से ना झिझकें

किसी ने क्या खूब लिखा है, झूठ बोलते थे फिर भी कितने सच्चे थे हम। यह उन दिनों की बात है जब बच्चे थे हम। आपने देखा होगा कि बच्चों को जो पसंद आता है, वे उसे पूरी मस्ती के साथ करते हैं। चाहे खेलना-कूदना हो, गाना हो या नाचना हो। उन्हें इस बात की बिल्कुल परवाह नहीं रहती कि कोई क्या सोचेगा या क्या कहेगा? उनका पूरा ध्यान सिर्फ अपनी खुशी और मस्ती में होता है। आपको भी बिल्कुल वही बेपरवाही अपनानी होगी। अपने हमउम्र दोस्तों के साथ ठहाके मारकर हंसना, चुटकुले सुनाना, डांस करना या जो अच्छा लगता हो करे। यकीन मानिए आप अपनी उम्र काफी कम महसूस करने लगेंगे। इस बारे में मनोचिकित्सक डॉक्टर संजय गर्ग कहते हैं, 'हम वयस्क होकर भी बच्चों जैसी मस्ती कर सकते हैं, लेकिन इसके लिए बनावटी कंफर्ट जोन से बाहर आकर रियल कंफर्ट जोन में जाने के लिए मेंटली प्रिपेयर होना पड़ेगा।'

लाइफस्टाइल / अंजू जैन

कुछ लोगों की आदत होती है कि वे हर छोटी-बड़ी बात पर जरूरत से ज्यादा सोच-विचार यानी ओवर थिंकिंग करते हैं। इससे वे कोई भी निर्णय जल्द नहीं ले पाते हैं। अगर आप भी ऐसी समस्या से ग्रस्त हैं तो यहां बताए जा रहे उपायों को आजमा सकते हैं।



क्या आप भी करते रहते हैं हर बात पर ओवर थिंकिंग

यह सही है कि कोई भी काम अच्छी तरह सोच-विचार कर करना चाहिए। विचारशीलता और मनन करना अच्छी बात है। लेकिन जब आपका चिंतन, मनन या विचार मंथन जरूरत से ज्यादा समय तक या ज्यादा मात्रा में होने लगता है तो यह अनायास ही चिंता और ओवर थिंकिंग की आदत में तब्दील हो जाता है, जो लाइफस्टाइल को प्रभावित कर सकता है। इसलिए इस हैबिट से उबरने के लिए यहां बताई जा रही बातों पर अमल करें।

दूसरों पर ध्यान न लगाएं: हमारा मन अक्सर बाहरी कारकों पर ध्यान केंद्रित करने पर उलझा रहता है। जब हम ईर्ष्या, दूसरों द्वारा हमारी आलोचना, दूसरों की सुरुच-समृद्धि पर ध्यान केंद्रित करते हैं तो हमारा मन अस्थिर और अशांत हो जाता है। इसलिए बेहतर होगा कि हमारी सोच और चिंतन का दायरा उन्हीं चीजों तक सीमित हो, जिन्हें हम सुधा, बदल या निर्वाचित कर सकते हैं। पुस्तक 'हेवर्नॉट गॉट टाइम फॉर द पेन' में लिखा गया है कि आपको अपने उलझे हुए विचारों को बदलना और उनका समाधान करना सीखना चाहिए। सबसे पहले जानिए कौन से विचार आपको पीड़ा देते हैं? उन विचारों को छोड़ने की कोशिश करें। ज्यादा चंचल स्वभाव इस बात को मानता नहीं और जीवन जीने और सोचने की प्रक्रिया को सरल रखें।



धैर्य बनाए रखें: यह एक मूलभूत सिद्धांत है कि आप जो अभी बोएंगे उसकी फसल आप बाद में काट पाएंगे। लेकिन हमारा चंचल स्वभाव इस बात को मानता नहीं और वह तुरंत परिणाम न मिलने पर विचलित हो जाता है। अपनी मेहनत के परिणाम के लिए जरा सा धैर्य रखिए फिर भी वांछित नतीजा ना मिले तो उस पर पुनर्विचार करिए। भाग्य को न कोर्स: मुश्किल परिस्थितियों में मनुष्य भाग्य को दोष देता है। लेकिन उसका भाग्य अधिकांशतः उसके चरित्र, जुनून, गलतियों और कमजोरी का ही प्रतिबिम्ब होता है। उसे अपने अवसरों से संतुष्ट रहना चाहिए और उनका फायदा उठाने की युक्ति पर विचार करते हुए स्वयं को बेहतर करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। परफेक्शन की जिद छोड़ें: कई लोग पूर्णतावाद के शिकार होते हैं। वह किसी काम को करने के बाद भी बार-बार सोचते हैं कि इसे और कैसे बेहतर किया जाए? अगर आपकी भी यह समस्या है तो इससे उबरें। एक काम के बाद अपनी अगली प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित करें।

मन को थकाने से बचें: आपको हर दिन छोटे-बड़े सैकड़ों निर्णय लेने होते हैं, जो आपके मन को थका सकते हैं। ऐसे में बहुत जरूरी है कि अपने दिमाग को शक्ति को बचाने के लिए एक दिनचर्या बनाएं, जिसमें उलझे हुए विषयों पर विचार के लिए एक वक्त तय कर दें। इसी समय जरूरी बातों पर निर्णय लें। बेवजह विचारों के सागर में डूबे रहना समय और ऊर्जा की बर्बादी है। इसकी बजाय सकारात्मक सोच के बीज बोएं और जरूरी चीजों पर विचार करें। पुस्तक 'डेवलपिंग इन टू, हेल्दी थिंकिंग' में कहा गया है कि सकारात्मक वाक्य हमें एक खुशहाल और भयमुक्त जीवन बनाने में प्रभावी शक्ति रूप से मदद करते हैं। अपनी आवश्यकताओं के अनुसार सुविधाएं चुनें या अपने प्रेरक वाक्यांश बनाएं और उन पर अमल करें।

समय पर छोड़ दें: अगर आप यह सोचकर चिंतित रहते हैं कि पता नहीं कोई समस्या सुलझेगी या नहीं, तो याद करें अतीत में आपने कितनी ही समस्याओं को सुलझाया है। इससे आपकी थिंकिंग पॉजिटिव साइड में चली जाएगी। इसके साथ ही आपको यह भी याद रखना चाहिए कि कई समस्याएं तो समय के साथ सुलझ जाती हैं। ओवर थिंकिंग से बचने का सबसे आसान तरीका पुस्तक 'स्टॉप लुकिंग बैक लिसन' में बताया गया है। इस पुस्तक में विस्तार से समझाया गया है कि आप वर्तमान में जिएं और उस क्षण को पूरी तरह महसूस करें। जिंदगी को एक तय उद्देश्य के साथ आगे बढ़ाएं। काम पर विश्वास करें और अपनी मानसिक स्थिति पर नियंत्रण रखें।

सजेशन
गौतिका शर्मा

सब कुछ पा लेने से ही सुकून नहीं मिलता। खुशी का मतलब दुनिया भर से जुड़े रहना ही नहीं होता। टेक्निक के घेरे में घिरी आज की जिंदगी में स्मार्ट तकनीकों से लैस गैजेट्स से दूरी बनाना भी मन को सुख दे सकता है। वर्चुअल दुनिया में अनजान लोगों तक से जुड़ने और हर पल जुड़े रहने के बजाय, स्क्रीन की मौजूदगी पर लगाव लगाना भी मन को खुशी दे सकता है। टिक-टिक की आवाज पर हमारा ध्यान भटकते नोटिफिकेशंस को बंद रखना भी मन को शांत सहज रख सकता है। कनाडा और अमेरिका में हुआ एक ताजा अध्ययन नोटिफिकेशंस की टोन पर भागते मन की लगाव थामकर असली दुनिया में सच्चे सुख को जीने की बात पुछा करता है।

टिक-टिक पर कंट्रोल के लाभ: बीते कुछ वर्षों में स्मार्टफोन का साथ एक आदत बन गया है। बहुत से लोगों के लिए तो स्क्रीन में झांकते रहना किसी लत से कम नहीं। वहीं इस आदत के खामियाजों को समझकर खुद को वर्चुअल व्यस्तता से बचाने के प्रयास भी खूब किए जा रहे हैं। हालांकि आज के समय में फोन एक जरूरत भी बन गया है। इससे पूरी तरह दूर रहना भी मुश्किल है। पर इसके लती बनने से तो बचा जा सकता है। अमेरिका और कनाडा की कुछ यूनिवर्सिटीज द्वारा एक महीने तक 467 आईफोन यूजर्स पर की गई एक रिसर्च इस मोर्चे पर सही और सहज राह दिखाती है। असल में इस स्टडी में शामिल होने वाले लोगों को फोन का उपयोग पूरी तरह बंद करने की बजाय इंटरनेट का इस्तेमाल न करने को कहा गया था। इन लोगों के फोन में बाकायदा एक एप डाउनलोड की गई थी, जो फोन

स्मार्ट गैजेट्स से दूर रहकर भी मिल सकती है खुशी-सुकून

हालांकि आज के दौर में स्मार्ट गैजेट्स से पूरी तरह दूर रहना तो संभव नहीं रह गया है। लेकिन अगर केवल इस पर इंटरनेट यूज को कंट्रोल कर लें तो भी खुशी और सुकून हासिल कर सकते हैं।



पर मोबाइल इंटरनेट ब्लॉक करने से जुड़ी थी। अध्ययन में सामने आया कि इंटरनेट बंद रखना लोगों का फोकस बढ़ाने और दिमाग की जवान करने में मददगार साबित हो सकता है। इतना ही नहीं कुछ दिनों तक अगर फोन में ऐसी सेंटिंग रखी जाए तो मूड में भी सुधार हो सकता है। इंसान का दिमाग तो 10 साल तक जवान हो सकता है। स्पष्ट देखने में भी आ रहा है कि पल-



सेटिंग्स का खास असर: फोन की सेटिंग्स चेंज करना कोई बड़ा बदलाव प्रतीत नहीं होता पर इसका असर बहुत अहम है। एक महीने की इस रिसर्च में दो हफ्ते बाद ही लोगों पर मोबाइल इंटरनेट बंद रखने की साधारण सी सेटिंग्स का आसाधारण प्रभाव दिखने लगा। अध्ययन में शामिल

को लेकर भी उन्होंने पॉजिटिव बदलाव महसूस किए। साथ ही अंटेेशन टेस्ट में इन लोगों के दिमाग ने अपने से 10 साल जवान लोगों के बराबर परफॉर्म किया। हर फ्रंट पर पॉजिटिव बदलाव: इस स्टडी में सामने आया कि लोगों ने फोन छोड़कर अपने से जुड़े इंसानों के साथ ज्यादा समय बिताया। अच्छे से नींद लेने और एक्सरसाइज करने पर भी ध्यान दिया। लोगों ने हर रात औसतन 17 मिनट अधिक नींद ली। इन नतीजों को देखते हुए रिसर्चर का कहना है कि स्मार्ट फोन से पूरी तरह दूरी नहीं बनाई जा सकती पर इसके इस्तेमाल में बैलेंस रखना बहुत आवश्यक है। यह बहुत व्यावहारिक सा पक्ष है कि हर पल मिलते नोटिफिकेशंस से दूर रहना मानसिक ठहराव देने का काम करता है। यह ठहराव एकाग्रता की सीमा तय करता है। फोकस रहने वाला इंसान कामकाजी संसार में बेहतर परफॉर्म कर पाता है।

नवगीत
गायिक विश्वकर्मा 'नवर्ग'

कांच के बर्तन

नहीं रोते करोमेंद कांच के बर्तन करने लगते हैं क्या के सामने बर्तन। फिजूल दूध को खोलाते रहे गय उते निकाल लेते हैं गलाई बेवने वाले एक में श्राता है केताओं के अब खरवना। सिर्फ बत्ती है तिरियाया बदले हैं मुखड़े नई नहीं है संख्या बदले हैं टुकड़े छुआ नहीं है सालों से कोई परिवर्तन काठने की लगी है छोड़ें

लंघा/ अंशुमाली रस्तोगी

सोना जब देखो तब बमचक मचाए ही रहता है। ऐसे में न खरीदने वालों के हाथ आ पाता रहा है, न चोरों के। इससे सबसे अधिक 'आर्थिक नुकसान' हमारे चोर भाइयों का होता है। बेचारे न सोना चुरा पाते हैं, न बेचा। महर्गे होने के कारण लोगों ने सोना पहनना भी कम कर दिया है। और घर में जो रखा होता है, उसे लॉकर में डलवा देते हैं। अब चोर किस मुंह से किसी के घर चोरी करने जाए। सोना ही एक ऐसा आइटम है, जिसे चुराकर वे अच्छी कमाई कर लेते हैं। अपना घर चला लेते हैं। लेकिन उस पर भी अक्सर ही ग्रहण लग जाता है। इसलिए छिनेती की घटनाएं भी अब घट गई हैं। वरना पहले तो चैन-कुंडल खींचने की वारदातें आए दिन अखबारों में पढ़ने को मिल जाया करती थीं। महिलाएं भी बड़ी अजीब हैं। अरे, अपने लिए नहीं तो कम से कम चोरों की भलाई के लिए ही सोना पहन कर घर से बाहर निकला करें। ताकि उन बेचाराओं को भी दुकान चलती रहे। एक यही तो उनकी कमाई का जरिया है, उस पर भी महर्गाई की मार। चोर अन्याय है चोर विरादरी के साथ। मैं इसकी सख्त शब्दों में मजमूत करता हूं। सरकार को इस बारे में जरूर कुछ सोच-विचार करना चाहिए। सोने के संग समस्या यही है कि वो कब बढ़ जाता है, कुछ पता नहीं चलता। रात भर में अपना दांव खेल देता है। लोगों ने भी सोने के प्रति ना जाने क्या मोह पाल रखा है कि रोटी पानी में डुबोकर खा लेंगे, लेकिन सोना जरूर खरीदेंगे। चाहे घर में खुद के रहने के लिए जगह न हो पर सोना जरूर रखेंगे। पहनने को चाहे टॉप के कपड़े न हों पर सोना जरूर पहनेंगे। मतलब हद है। यह नहीं होता कि थोड़ा सोना चोरों को भी दे दें ताकि उनका घर-परिवार भी चलता रहे। किसी गरीब की भलाई करने में दुआएं ही मिलती हैं।

लोग सोने के महंगा होने पर, अदृश्य डर के कारण, उसे लॉकर में डलवा देते हैं, जबकि नौने सोना घर में ही रख छोड़ देते हैं। वो इसलिए करत को अगर चोर भरे घर चोरी करने आता है तो उसे निराश होकर न लौटना पड़े।

सोना और चोर



चोरी करना कितना जोखिम भरा काम है, यह तो कोई चोर से ही पूछो। किसी अनजान घर में जाकर चुराई करना, मेरे तो सोचकर ही पसीने छूट जाते हैं। यहां मैं कलम चलकर ही खुद को ऊंचा लेखक मानता हूं। अजी, कलम का क्या है कोई भी चला सकता है। परंतु चोरी हर कोई नहीं कर सकता। इसके लिए जिगर और इच्छाशक्ति दोनों की भरपूर जरूरत होती है। कभी-कभी तो चोर मुझे, लेखकों से कहीं अधिक सरल और सच्चे जान पड़ते हैं। लेखक चूँकि

बुद्धिजीवी होता है, इसलिए हर समय शब्दों-भाषा का जाल बुनता रहता है। चोर सिर्फ चोर होता है। अपने धंधे से मतलब रखता है। यहां-वहां अपनी टांग नहीं फंसाता फिरता। वो तो खामखाह मैं लेखक बन गया, जबकि मुझे तो चोर ही बनना चाहिए था। लोग सोने के महंगा होने पर, अदृश्य डर के कारण, उसे लॉकर में डलवा देते हैं, जबकि मैंने सोना घर में ही रख छोड़ा है। वो इसलिए करत को अगर चोर भरे घर चोरी करने आता है तो उसे निराश होकर न लौटना पड़े। उसका भी घर-परिवार चलता रहे। वो मुझे दुआएं दे। सोने का क्या है, वो तो पैसे की तरह हाथ का मेल है। आज है, कल नहीं। बल्कि मैं तो चाहता हूँ। ज्यादा नहीं तो महीने में दो चोरियां तो अपने घर में करवा ही लेनी चाहिए। बड़े-बुजुर्ग भी कह गए हैं, धन बांटने से बढ़ता है। सही बोल रहा हूँ, सोने का चोरी चला जाना पुण्य का काम है। इससे घर में बरकत बनी रहती है। सोने का महंगा होना चोरों के पेट पर लात है। मुझे आम आदमी की सोने के पीछे दीवानी कभी समझ नहीं आई। जिसे देखो वो सोना जोड़ने में लगा पड़ा है। कोई शौक के लिए जोड़ रहा है तो कोई शादी के लिए जोड़ रहा है तो कोई आड़े वक्त के लिए जोड़ रहा है। अर्मा, क्या कीजिएगा इतना सोना जोड़कर। जबकि साथ कुछ नहीं ले जाना है फिर भी...। यही सोना जब चोरी चला जाता है तब रोते हैं। चोरों को बड़ुआएं देते हैं। थाने में रपट लिखवाते हैं। बेवजह पुलिस वालों को भी परेशान करते हैं। मैं तो फिलहाल इस प्रतीक्षा में हूँ कि सोना जल्द थोड़ा और नीचे आ जाए और चोरों का कारोबार फिर से चल निकले। मुझे यह कई अच्छा नहीं लगता कि हम खाएं और चोर बेचारे हमारा मुंह ताकें। उनका दाना-पानी भी चलता रहे तो क्या हर्ज है।

पुस्तक चर्चा / विज्ञान गूण

सर्जना और व्याख्या

विश्व लेखक-पत्रकार अवधेश श्रीवास्तव साहित्य के गंभीर पाठक-विवेचक भी हैं। लंबे समय से वे विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के लिए पुस्तक समीक्षाएं कर रहे हैं। हाल में उनकी लिखी समीक्षाओं का संकलन 'सर्जना और व्याख्या' पुस्तकाकार में आया है। इसमें उनके द्वारा लिखी गई तीस पुस्तकों की समीक्षाएं संकलित हैं। अवधेश श्रीवास्तव पुस्तकों का मूल्यांकन पूरी गंभीरता से करते हैं। वे अगर किसी किताब की विशिष्टताओं को रेखांकित करते हैं तो उसकी खामियों पर भी अंगुली रखने से परहेज नहीं करते हैं। यहां विष्णु प्रभाकर, भगवती चरण वर्मा, असगर वजाहत, अलका सरावगी, गोविंद मिश्र, शिवमूर्ति, राम दश मिश्र, ओम निश्चल आदि की पुस्तकों के अलावा अनैस्ट हेमिंग्वे के अनूदित उपन्यास 'शख्त विदाई' की समीक्षा भी पढ़ी जा सकती है।



पुस्तक: सर्जना और व्याख्या (समीक्षात्मक लेख)
लेखक: अवधेश श्रीवास्तव, मूल्य: 250 रुपए,
प्रकाशक: शांती प्रकाशन, गाजियाबाद

महादेव शिव की दिव्य-भव्य प्रतिमाएं

आस्था / शिखर चंद जैन

महादेव शिव को समर्पित सावन के विशेष महीने में भक्तगण भगवान शिव से जुड़े तीर्थ-स्थलों की यात्रा करते हैं। इस अवसर पर हम आपको अपने देश के विभिन्न स्थानों में स्थित भगवान शिव की कुछ दिव्य और भव्य प्रतिमाओं के बारे में बता रहे हैं। इनके दर्शन मात्र से विलक्षण शांति प्राप्त होती है।

मुरुदेश्वर महादेव कर्नाटक

कर्नाटक के उत्तरी हिस्से के भटकल तहसील में स्थित है मुरुदेश्वर महादेव मंदिर। 'मुरुदेश्वर' भगवान शिव का ही एक नाम है। यहां महादेव की जो मूर्ति स्थापित की गई है, वह देश-जुनिया की दूसरी सबसे बड़ी शिव प्रतिमा है। यह प्रतिमा 123 फीट ऊंची है। इसे बनाने में 2 साल का वक्त लगा। मुरुदेश्वर मंदिर अरब सागर के तट पर स्थित है। यह तीन ओर से अरब सागर से घिरा हुआ है। यह स्थल मंगलौर से 165 किलोमीटर दूर स्थित है। यहां साल भर भक्तों और पर्यटकों का आगमन होता रहता है। *



आदियोगी शिव, कोयंबटूर

भगवान शिव के मुख की दुनिया में सबसे बड़ी प्रतिमा है आदियोगी शिव प्रतिमा। कोयंबटूर से करीब 30 किलोमीटर दूर स्थित यह शिव प्रतिमा 112 फीट ऊंची है। इसका वजन 500 टन है। इसका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी दर्ज किया गया है। इस प्रतिमा को बनाने में सीमेंट, कंक्रीट, बालू आदि किसी भी वस्तु का इस्तेमाल नहीं किया गया है बल्कि इसे धातु के टुकड़ों से बनाया गया है। इसके निर्माण में ढाई साल लगे। इस मंदिर के निर्माण से संबद्ध संस्था ईशा फाउंडेशन के अनुसार आदियोगी शिव का यह चेहरा मुक्ति का प्रतीक है। यह शिव प्रतिमा योग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बनाई गई है। *



सर्वेश्वर महादेव, वडोदरा

गुजरात के वडोदरा शहर के मध्य में स्थित है सूरसागर झील और इस झील के बीचों-बीच विराजमान हैं सर्वेश्वर महादेव। 78 फीट गहरे 23 खंभों पर टिकी सर्वेश्वर महादेव की यह मूर्ति 120 फीट ऊंची है। इसके निर्माण में 6 वर्ष लगे थे। यह स्थान अहमदाबाद से 112 किलोमीटर दूर है। शिव भक्तों के लिए यह मंदिर आस्था का केंद्र तो है ही, अन्य धर्मावलंबियों एवं पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केंद्र है। इस मंदिर के आस-पास भी बहुत कुछ दर्शनीय है। *



सिद्धेश्वर महादेव, सिक्किम

सिक्किम के सोलोफोक पहाड़ी पर सिद्धेश्वर महादेव यानी भगवान शिव की बेटी हुई मुद्रा में लगभग 87 फीट ऊंची प्रतिमा विराजमान है। आधार से इसकी ऊंचाई 108 फीट है। सिक्किम के लोग इसे नामची महादेव और भगवान किरतेश्वर के नाम से भी पूजते हैं। सफेद रंग की यह मूर्ति आस्थावान शिव भक्तों के साथ-साथ पर्यटकों को भी आकृष्ट करती है। यहां भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों के साथ-साथ चार धार्मिक-बढ़ीनाथ, जगन्नाथ, द्वारका और रामेश्वर की प्रतिकृतियां भी स्थापित हैं। *



ये शिव प्रतिमाएं भी हैं भव्य

यहां वर्णित भगवान शिव की विशाल एवं दिव्य प्रतिमाओं के साथ-साथ देश में कई अन्य स्थानों पर भी शिव के विशाल स्वरूप के दर्शन होते हैं।

- ▶ जबलपुर (मध्य प्रदेश) के कंठाट शहर में 76 फीट लंबी शिव प्रतिमा मौजूद है। इसके चारों तरफ 12 ज्योतिर्लिंग भी विराजित किए गए हैं।
- ▶ बैंगलुरु में शिवोहम शिव मंदिर में मौजूद शिव प्रतिमा 65.6 फीट ऊंची है। यहां पृथ्वीमणि में हिमालय की प्रतिकृति बनाई गई है।
- ▶ गुजरात के द्वारका में मौजूद है नागेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर। यहां विराजित शिव प्रतिमा 82 फीट ऊंची है।



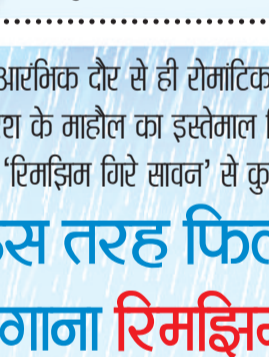
बैंगलुरु शिवोहम शिव मंदिर



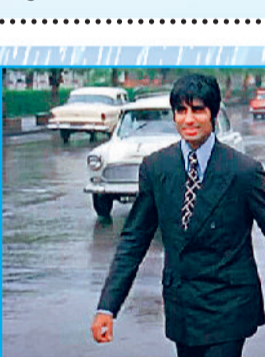
गुजरात नागेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर

हर की पैड़ी के शिव, हरिद्वार

हरिद्वार में हर की पैड़ी मंदिर बेहद लोकप्रिय श्रद्धा का केंद्र है। इसके ठीक सामने मौजूद है स्वामी विवेकानंद पार्क जहां भगवान शिव की 100 फीट ऊंची प्रतिमा विराजमान है। यहां दूर शाम तक ठहर कर आप महादेव शिव के दर्शन के साथ-साथ गंगा आरती का भव्य नजारा भी देख सकते हैं। *



बैंगलुरु शिवोहम शिव मंदिर



गुजरात नागेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर

सेल्फ इंफुवेंट / जोगिंदर रोहिल्ला

सफलता के लिए सीखनी होगी

समय प्रबंधन की कला

समय की कद करना ही सफलता की पहली सीढ़ी है। पैसा, शोहरत, संबंध, सब कुछ दोबारा पाया जा सकता है, लेकिन एक बार गया हुआ समय फिर नहीं आता। इसलिए अगर सफल होना चाहते हैं, तो समय प्रबंधन की कला सीखनी ही होगी।

भारत के प्रसिद्ध महान आचार्य चाणक्य ने कहा था, 'पैसा दोबारा कमाया जा सकता है, लेकिन गया हुआ समय कभी वापस नहीं आता।'

सच है, हम सभी के पास दिन में 24 घंटे होते हैं। किसी के पास न ज्यादा, न कम। इसके बावजूद कुछ लोग हर दिन नई ऊंचाइयों को छूते हैं, जबकि बहुत सारे लोग समय की कमी को शिकायत करते रहते हैं। इसका कारण सीधा और स्पष्ट है- सफल लोग समय को सिर्फ बिताते नहीं, वे अच्छे से समय को मैनेज करते हैं। हालांकि आज की तेज रफतार जिंदगी में लोग सबसे ज्यादा जिस चीज की कमी महसूस करते हैं, वह है- समय। घर-ऑफिस का वर्क प्रेशर, सोशल मीडिया, परिवार की जिम्मेदारियों में उलझकर लोग यही कहते हैं, क्या करें समय ही नहीं मिलता। पर सच यह है कि समय मिलता नहीं, समय मैनेज करना होता है। इसीलिए ब्रायन ट्रेसी ने कहा है, 'जो लोग अपने समय को नियंत्रित नहीं करते, वे अपने जीवन को नियंत्रित नहीं कर सकते।'

सबसे सफल टेनिस खिलाड़ी रोजर फेडरर के सफल बनने के पीछे केवल उनकी प्रतिभा ही नहीं, बल्कि उनका अनुशासित समय प्रबंधन भी था। उन्होंने अपनी ट्रेनिंग, रिकवरी और निजी जीवन-तीनों को संतुलन के साथ समयबद्ध किया, जिससे उनका प्रदर्शन लगातार ऊंचाइयों पर बना रहा।

समय प्रबंधन क्यों है जरूरी: हमें समझना होगा कि समय सीमित है। औसतन इंसान के पास सिर्फ 4000 हफ्ते होते हैं। घर-बाहर के काम कभी खत्म नहीं होते, इसलिए यह तय करना जरूरी है कि किस काम को पहले करना है और किसे बाद में? आपको समझना होगा कि संतुलित जीवन में करियर, स्वास्थ्य, रिश्ते, खुशी सभी के लिए समय चाहिए होता है। जब हर चीज की प्लानिंग होती है तो समय तनाव कम होता है, मन शांत रहता है।

समय प्रबंधन के तरीके: समय प्रबंधन करना बहुत कठिन नहीं होता है, इसके लिए कुछ बातों का ध्यान रखना होता है।

प्राथमिकता तय करें: जो काम जरूरी है, वही पहले करें। अर्जेंट और इंपॉर्टेंट का अंतर समझें। इसी तरह यह



भी बहुत जरूरी है कि अनावश्यक कामों को मना करना सीखें। ऐसे काम करने में अपना टाइम वेस्ट ना करें। प्लानिंग करें: काम शुरू करने के पहले से ही आपको हर महीना, हफ्ता और हर दिन प्लान होना चाहिए। अगर ये बहुत ज्यादा लगता है तो हर हफ्ते और हर दिन की प्लानिंग से शुरू कीजिए। अपने कार्यों को एक निश्चित समय और क्रम में इस तरह से प्लान कीजिए कि हर जरूरी काम समय पर, सही ध्यान और ऊर्जा के साथ पूरा किया जा सके।



यदि रीखिए कि आपको प्लानिंग में जिंदगी के हर पहलू का ध्यान रखना है। जैसे- करियर, हेल्थ, परिवार, हॉबी।

इवेल्यूएशन करें: हर वीक के अंत में अपना इवेल्यूएशन खुद करें। स्वयं से पूछें कि इस हफ्ते मेरी उपलब्धियां कैसी रही? क्या मैं अपने समय का सदुपयोग कर

पाया? क्या इसमें और सुधार की जरूरत है? इन सब प्रश्नों के उत्तर आपको हर हफ्ते अपने टाइम मैनेजमेंट को इंफुव करने में मदद करेंगे।

ना करें टाइम वेस्ट: आज के समय में सोशल मीडिया लोगों का समय वेस्ट करने वाला सबसे बड़ा जरिया बन गया है। हम अनजाने में दिन के कई घंटे इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, यूट्यूब या फेसबुक पर बिता देते हैं। जरूरी है कि हम इन चीजों के इस्तेमाल पर नियंत्रण रखें। आप खुद तय कर सकते हैं कि दिन में कितना समय इनको देना है। यह समझना जरूरी है कि हर काम के लिए 'हां' कहना जिम्मेदारी नहीं, कमजोरी बन सकता है। जब जरूरत हो, तो 'ना' कहना सीखें, ताकि आप अपने समय और ऊर्जा को सही दिशा में लगा सकें। *

यादें

अशोक वाघवाणी

सावन और बरसात का हिंदी फिल्मों से पुराना कनेक्शन रहा है। बीते दौर की ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों से लेकर आज तक हिंदी फिल्मों में बरसात में भीगते हुए नायक-नायिका पर रोमांटिक गाने फिल्माने की परंपरा चल रही है। इस तरह के प्रयोग अकसर ही फिल्म और गाने को हिट कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बारिश में फिल्माए गए कई गाने इतने लोकप्रिय हुए हैं कि आज भी बारिश के मौसम में भीगने पर आम लोगों को भी उनकी पंक्ति याद आ ही जाती है। ऐसे ही यादगार गानों की कड़ी में शामिल है वर्ष 1979 में रिलीज हुई फिल्म 'मंजिल' के का वो सुपरहिट गीत 'रिमझिम गिरे सावन...', जिसे फिल्माया गया था अमिताभ बच्चन और मौसमी चटर्जी पर। देखा जाए तो इस

हिंदी सिनेमा के आरंभिक दौर से ही रोमांटिक दृश्यों को प्रभावी बनाने के लिए सावन और बारिश के माहौल का इस्तेमाल किया जाता रहा है। ऐसे ही एक यादगार गीत 'रिमझिम गिरे सावन' से कुछ दिलचस्प बातें जुड़ी हुई हैं।

कुछ इस तरह फिल्माया गया था पॉपुलर गाना रिमझिम गिरे सावन...

गाने की लोकप्रियता में बरसात ने उत्प्रेरक का काम किया। बासु चटर्जी के निर्देशन में बनी फिल्म 'मंजिल' मृगाल सेन द्वारा निर्देशित बांग्ला फिल्म 'आकाश कुसुम' (1965) का रीमेक है। इस फिल्म की कहानों को दर्शकों, समीक्षकों की समान रूप से सरहना मिली थी। बैकग्राउंड में बजता है गाना: फिल्म 'मंजिल' के इस लोकप्रिय-कर्णप्रिय गीत 'रिमझिम गिरे

सावन, सुलग-सुलग जाए मन...' को लिखा था योगेश ने और इसका सुरीला संगीत दिया था आर.डी. बर्मन ने। दिलचस्प बात यह है कि इस गाने को लता मंगेशकर और किशोर कुमार ने आवाज दी है, तो भी यह युगल गीत नहीं है। ये गाना अमिताभ बच्चन और मौसमी चटर्जी पर बारिश में भीगते हुए फिल्माया गया है। लेकिन पढ़ें पर इन दोनों कलाकारों को यह गाना गाते हुए नहीं



दिखाया गया है। पूरे सीक्वेंस के दौरान केवल बैकग्राउंड में बजता रहता है- रिमझिम गिरे सावन...

असली बारिश में फिल्माया गया: इस लोकप्रिय गीत के साथ एक दिलचस्प बात यह भी जुड़ी है कि इसको मुंबई की असली बारिश में अलग-अलग लोकेशंस पर तीन दिनों तक पिक्चराइज किया गया था। मुंबई के मरीन ड्राइव,

गिरगांव चौपाटी, फोर्ट, गेट वे ऑफ इंडिया, ओवल मैदान, हुतात्मा चौक आदि दक्षिण मुंबई के दर्शनीय स्थानों पर इसे शूट किया गया। अमिताभ और मौसमी ने भी इस गाने में स्वाभाविकता लाने की कोशिश की, जिसमें दोनों सफल भी हुए। सूट, टाई पहने अमिताभ और सीधी-सादी

साड़ी पहने मौसमी बिना छाते के बारिश में भीगते, अठखेलियां करते हुए टहलते दिखते हैं। बारिश से बचने के लिए इनके पास कोई छाता या रैन कोट नहीं होता है। वहीं हाथों में छाता थामे हुए लोगों का हजुम, इन्हें भीगते हुए देखता है। इससे प्रबंधन के तरीके: समय प्रबंधन करना बहुत कठिन नहीं होता है, इसके लिए कुछ बातों का ध्यान रखना होता है।

प्रेमियों की भाँति अमिताभ-मौसमी का भीगना बहुत अच्छा लगता है। समंदर किनारे बनी दीवार पर अमिताभ का हाथ पकड़े हुए मौसमी का चलना-फिरना, अमिताभ का दोनों हाथों से पकड़ कर मौसमी को नीचे उतारना, चेहरे पर जमी बारिश की बूंदों को मौसमी द्वारा अपनी साड़ी के पल्लू से पोंछना, ये सारे दृश्य सुंदर, स्वाभाविक और कमाल बन पड़े हैं।

पूरे गाने में दोनों कलाकारों का उत्साह देखते ही बनता है। बालमन जिस तरह बिंदुसपन के साथ बारिश में उछलता-कूदता है, बिल्कुल वही उमंग, उत्साह, उल्लास, ऊर्जा दिखती है दोनों में। गोथिक शैली की ब्रिटिशकालीन बड़ी-बड़ी इमारतों के सामने, नाटियल के पेड़ों के पास खुले मैदान के गड्ढों में भरे पानी को पूरे जोश-जुनून के साथ पैरों से छपाक मारना, अमिताभ-मौसमी का मासूम अल्ट्राडान, ...गाने का एक-एक फ्रेम, एक-एक दृश्य बेहद खूबसूरत बन पड़ा है। *

आकाशवाणी सार्वजनिक क्षेत्र की रेडियो प्रसारण सेवा है, जो लगभग एक सदी से ज्ञान, सूचना और मनोरंजन का साधन बना हुआ है। आगामी 23 जुलाई को आकाशवाणी के स्थापना दिवस पर इसकी अब तक की यात्रा पर एक नजर।

अतीत से अब तक बरकरार आकाशवाणी की महत्ता

जानकारी

पूनाम पांडे

आज आभासी दुनिया और तकनीक से सब कुछ जान लेने वाली पीढ़ी को अगर साढ़े चार दशक पहले के भारत की यह खास बात बताई जाए कि आकाशवाणी जीवन का एक अटूट हिस्सा हुआ करता था तो शायद वो एकदम से यकीन न करे। पर यही तब के समय का सच था।

आकाशवाणी की शुरुआत

आकाशवाणी की स्थापना 23 जुलाई 1927 को की गई थी। उस समय इस सेवा का नाम भारतीय प्रसारण सेवा (इंडियन ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन) रखा गया था। तब देश में रेडियो प्रसारण की शुरुआत मुंबई और कोलकाता में दो निजी ट्रांसमीटरों से की गई थी। 1930 में इसका राष्ट्रीयकरण हुआ। 1936 में इसका नाम ऑल इंडिया रेडियो रखा गया और 1957 में इसे आकाशवाणी नाम दिया गया।

जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका

उस दौर में भारत में साक्षरता दर बहुत कम थी। वे दुनिया की दौड़ में बहुत पीछे थे। आकाशवाणी के माध्यम से बड़े ही सरल ढंग से आम बोल-चाल की भाषा में विभिन्न प्रकार की जानकारीयां आम लोगों तक उपलब्ध कराई जाती थीं। दूर-दराज के



ग्रामीण इलाके में लोगों से जुड़कर और उनको जागरूक करने में रेडियो पर प्रसारित होने वाले आकाशवाणी के कार्यक्रमों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। भारत के राष्ट्रीय प्रसारक के रूप में, ऑल इंडिया रेडियो (एआईआर) यानी आकाशवाणी आज भी जनता को मनोरंजन, सूचना एवं ज्ञानपरक सेवाएं दे रहा है। आकाशवाणी शुरुआत से ही अपने आदर्श वाक्य 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' का अनुसरण कर रहा है।

आकाशवाणी का व्यापक नेटवर्क

अपनी स्थापना के बाद से धीरे-धीरे आकाशवाणी के नेटवर्क का विस्तार होता गया। आज आकाशवाणी का तेइस भाषाओं और एक सौ छियालीस बोलियों में प्रसारण होता है। आकाशवाणी का व्यापक नेटवर्क देश की लगभग पूरी आबादी एवं क्षेत्र को कवर करता है।

हर तरह का मनोरंजन

आकाशवाणी समस्त भाषायां प्रदेशों की जनता के

लिए गीत-संगीत, नाटक, गोष्ठियां, वातांश, रूपकों, संस्मरणों आदि मनोरंजक कार्यक्रमों का प्रसारण करता है। इसके अलावा आकाशवाणी की विविध भारतीय सेवा फिल्मों गीतों को समर्पित होती है। आकाशवाणी पर समस्त कार्यक्रमों का लगभग पचास प्रतिशत समय मनोरंजन परक कार्यक्रमों के लिए होता है।

सूचना, शिक्षा एवं ज्ञान भी

आकाशवाणी पर हर एक घंटे पर मुख्य समाचार प्रसारित किए जाते हैं। इसके अलावा प्रातःकाल और सायंकाल में 15 मिनट की अवधि का समाचार बुलेटिन प्रसारित होता है। यह समाचार बुलेटिन हिंदी और अंग्रेजी भाषा में प्रसारित किया जाता है। बुलेटिन को इस तरह से तैयार किया जाता है कि श्रोता को उसे समझने के लिए किसी भी शब्दकोश का सहारा न लेना पड़े। आकाशवाणी पर श्रोताओं के विभिन्न समस्याओं को लेकर वातांश भी प्रस्तुत की जाती हैं। अनुसंधानों के परिणामों, अभिभाषणों की कार्यवाही को लिपिबद्ध करके प्रस्तुत किया जाता है। इसके अंतर्गत कृषि, विज्ञान संबंधी शिक्षा देना भी शामिल होता है। आकाशवाणी के माध्यम से स्कूल तथा कॉलेज की कक्षाओं के लिए रेडियो द्वारा पाठ्य विषयों पर चर्चाएं भी प्रसारित की जाती हैं।

कायम है प्रासंगिकता

देखा जाए तो आज भी रेडियो और आकाशवाणी जनसंचार का सशक्त माध्यम बना हुआ है। इसने गांव-गांव तक ज्ञान की चेतना को पहुंचाने का अविस्मरणीय कार्य किया है। हालांकि आज संचार के विविध माध्यम, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और हर हाथ में मोबाइल की पहुंच ने रेडियो और आकाशवाणी के अस्तित्व को चुनौती अर्थ देते हैं, लेकिन इसकी कुछ अनूठी विशेषताओं के कारण आज भी इसकी लोकप्रियता, उपयोगिता एवं प्रासंगिकता बनी हुई है। *

खान-पान

चेतना झा

लाजवाब राजस्थानी दाल-बाटी-चूरमा: राजस्थान की धरती पर बारिश की बूंदें स्वाद की नई बहार भी लेकर आती हैं। बारिश हुई नहीं कि गोट के प्रोग्राम बनने लगते हैं। गोट यानी, प्रकृति के करीब या पाकों में जाकर सामूहिक पिकनिक मनाना। अपनों के साथ खुले सुखद परिवेश में दाल-बाटी चूरम का रसास्वादन सबसे ज्यादा चलन में है। सावन के महीने में तीज और राखी जैसे पर्व पर यहां की फिजा में घेवर की खुशबू भी घुल-मिल जाती है। घेवर में स्वाद की इतनी विविधता मिलती है कि आप चखते जाएंगे पर इसका अंत नहीं होगा। मेवाड़ क्षेत्र में घूमिए तो



दाल-बाटी-चूरमा

गली-गली से उठती पकौड़े, मालपूर की सुगंध भूख बढ़ा देती है। इसके साथ ही भुट्टे की सब्जी के साथ घी चुपड़ी रोटी का स्वाद कभी नहीं भुला पाएंगे।

यूपी में अंगीठी वाली मीठी रोटी: अब बात यूपी की अंगीठी वाली मीठी रोटी, अरबी के पत्ते के पकौड़े, अगस्त्य के फूल के पकौड़े की। भिगोकर पीसी गई उड़द और चने की दाल को हरी मिर्च, धनिया, अदरक डाल कर भून देते हैं, फिर धो-सुखा कर, अरबी के पत्तों पर इन्हें लपेट कर स्ट्रीम देते हैं। इसके बाद बनती है इनकी पकौड़ी। लंबी प्रक्रिया है लेकिन बरसात आते ही घर-घर में इसे बनाया और चाव से खाया जाता है। झारखंड में धुसका-बरा: 'धुसका बरा' खाएंगे,

बारिश का मौसम और पकौड़े का कनेक्शन तो आप जानते ही हैं! लेकिन यहां हम आपको देश के अलग-अलग हिस्सों में खाए जाने वाले कुछ जायदेदार मानसूनी व्यंजनों के बारे में बता रहे हैं, जिनका स्वाद आप कभी भुला नहीं पाएंगे।

जायकेदार मानसूनी व्यंजनों का स्वाद



अगस्त्य के फूल के पकौड़े



धुसका-बरा

झारखंड में बस जाएंगे... इस गाने की पंक्तियों की तरह ही हिट है झारखंड का धुसका-बरा। सच है, बारिश के दिनों में झारखंड की हरी-भरी धरती पर धुसका खाने के बाद किसी का भी दिल यहां बस जाने को करेगा। बराबर की मात्रा में चना दाल और अरवा चावल को भिगोकर उसमें जीरा, मिर्च तैयार किए गए सोंधे-सोंधे बड़ों। पकाने के बाद इन बड़ों से राख झाड़ कर घी की कटोरी में डुबो देते हैं, फिर खट्टी-मिठ्टी दाल के साथ इसका स्वाद लिया जाता है। *

चाव से खाया जाता है। इसे 'शाकाहारी मटन' भी कहा जाता है। एमपी में दाल-बाफला: पश्चिमी मध्य प्रदेश का एक बड़ा हिस्सा है मालवा। यहां बारिश की बूंदें दाल-बाफला का संदेश लेकर आती हैं। बाफला यानी आटे की बाटी को कंडे की आग में पका कर तैयार किए गए सोंधे-सोंधे बड़ों। पकाने के बाद इन बड़ों से राख झाड़ कर घी की कटोरी में डुबो देते हैं, फिर खट्टी-मिठ्टी दाल के साथ इसका स्वाद लिया जाता है। *

बिहार की कचरी-मूरही और लिट्टी-चोखा

बिहार में बारिश होते ही लिट्टी और बैंगन के छोड़े के अलावा कचरी-मूरही की तलब जगने लगती है। कचरी यानी लच्छे में कटे प्याज में कटी हरी मिर्च, लहसुन, अदरक, बैंगन, फूलगोभी और मसाले डाल कर बैंगन के घोल में लपेट कर तैयार पकौड़े मूरही यानी पफ्ड राइस या मुरमुरे। बारिश में गरमा-गरम कचरी के साथ मूरही का स्वाद भुलाया नहीं जा सकता है।

लिट्टी के लिए चने के सतु में बारीक कटी हरी मिर्च, धनिया पत्ती, अदरक, लहसुन, नींबू का रस, अजवाइन, कलीजी, नमक और कुछ बूंदें सरसों के तेल डाल कर मिश्रण तैयार किया जाता है। लूनें आटे की गोली में यह मिश्रण डाल कर गोड़ते जा कोयले की आग में पकाया जाता है। फिर इसी आंव पर बैंगन को भुल कर चोखा तैयार किया जाता है। इसका स्वाद एक बार अनुर जुबान पर चढ़ गया तो यकीन मालिए, इसे बार-बार खाने का जी करेगा।